अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-42, अंक-20, 1-15 जून 2019

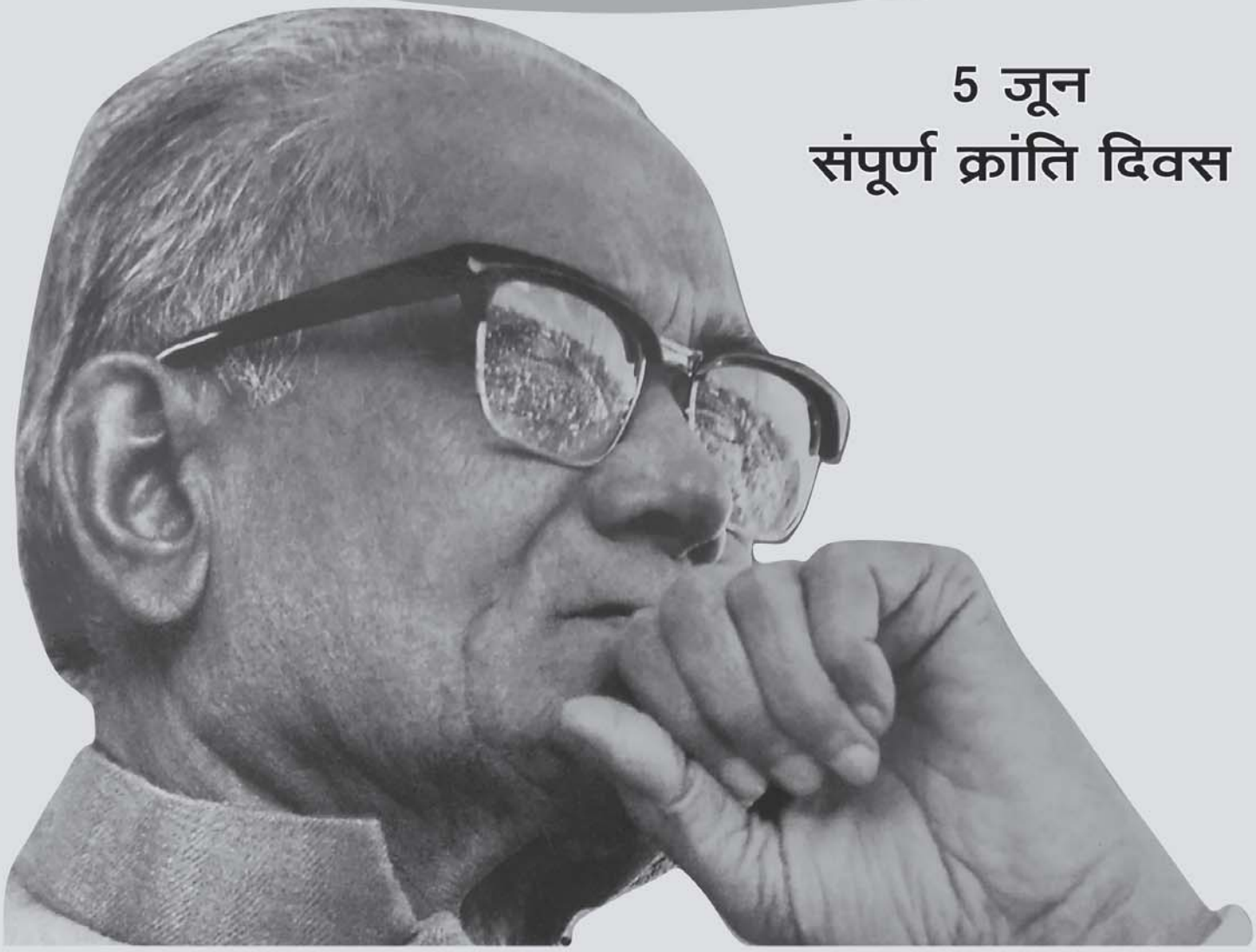

5 जून
संपूर्ण क्रांति दिवस

मेरे नवयुवक मित्रों! तुम्हारा मार्ग प्रशस्त हो!

संपूर्ण क्रांति का मेरा स्वप्न जमीन पर उतारना युवा शक्ति के ही हाथ में है। मैं तो वह दिन देखने के लिए नहीं रहूंगा पर, समाज का अंतिम व्यक्ति जब इज्जत के साथ जीवन जी सकेगा, अपनी क्षमता भर मेहनत कर सकेगा और अपनी आवश्यकता भर पा सकेगा, तब मुझे संतोष होगा। इन बातों पर अमल करना आसान नहीं होगा। अमल करने के लिए बलिदान करना होगा, कष्ट सहना होगा, गोली और लाठियों का सामना करना होगा, जेलों को भरना होगा। वह समय आ गया है जब हमें कुर्बानी के लिए खड़ा होना होगा। यह बड़ा कठिन काम है परंतु आपकी सफलता निश्चित है, क्योंकि यह युगधर्म की पुकार है। कालचक्र घूमता ही रहता है। रात चाहे कितनी ही अंधेरी हो, प्रभात फूटकर ही रहता है। कुर्बानियां कभी बेकार नहीं जा सकतीं। यह क्रांति है मित्रों, और संपूर्ण क्रांति है। यह लड़ाई लंबी है। दूर जाना है...दूर जाना है।

- जयप्रकाश नारायण

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 42, अंक : 20, 1-15 जून 2019

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. संपूर्ण क्रांति आंदोलन का पावन स्मरण... 3
3. गोडसे के डीएनए वालों, सावधान!... 5
4. आपातकाल ने संपूर्ण क्रांति आंदोलन... 6
5. बंद दिमाग से नहीं हो सकती संपूर्ण... 8
6. एक सपना था जो शब्द बनकर रह गया... 9
7. क्रांतिकारी साबित हुआ भूमि संघर्ष... 10
8. संपूर्ण क्रांति के दर्शन का आशय... 12
9. समाज को भरोसा दिलाना होगा... 13
10. संघर्ष वाहिनी के दिन... 14
11. मुसहरी आंदोलन... 15
12. क्या आरएसएस ने महात्मा गांधी को... 16
13. लोक-विमर्श... 18
14. गतिविधियां एवं समाचार... 19
15. कविता... 20

संपादकीय

संपूर्ण क्रांति की विरासत

संपूर्ण क्रांति का विचार इस परिस्थिति में से निकला था कि यदि राजसत्ता जनविरोधी हो जाये तो जनता का क्या कर्त्तव्य होगा। लोकतंत्र में राजसत्ता, प्रतिनिधियों के समर्थन पर टिकी होती है, अतः यदि राजसत्ता जन विरोधी हो तो, जनता का यह अधिकार एवं कर्त्तव्य होता है कि वह अपने प्रतिनिधि से कहे कि इस राजसत्ता को समर्थन देना बंद करो। और यदि प्रतिनिधि न माने तो जनता उसे वापस बुलाने के अधिकार को अपनी प्रचंड शक्ति द्वारा प्रकट करे। इसमें एक बीज विचार था। वह यह कि लोकतंत्र में सम्प्रभुता लोक में निहित होती है, और जनता का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी सम्प्रभुता को अक्षुण्ण रखे। संपूर्ण क्रांति आंदोलन में इस बीज विचार का विस्तार हुआ कि लोक की सम्प्रभुता के विभिन्न आयामों का प्रकटीकरण कैसे हो।

भारत में राजसत्ता जनविरोधी इसलिए होती चली गयी क्योंकि भारत विभाजन के कारण केन्द्रीकरण की शक्तियों को सबल करने का मार्ग प्रशस्त होता गया। आजादी की लड़ाई का लक्ष्य था स्वराज्य को लोक की बुनियादी इकाई तक ले जाना। किन्तु आजादी के बाद मुख्य लक्ष्य विकास हो गया, ऐसा विकास जो स्वराज्य केन्द्रित न होकर, केन्द्रीय सत्ता द्वारा नियंत्रित एवं निर्देशित हो, इसे अन्ततः जनविरोधी बनना ही था। स्वराज्य के मॉडल के बजाय विकास का मॉडल अपनाना एक बड़ी भूल थी। इस कारण संपूर्ण क्रांति आंदोलन स्वराज्य की नींव पर नयी अर्थव्यवस्था के निर्माण का पक्षधर हो गया।

केन्द्रीकृत राजसत्ता और केन्द्रीकृत विकास का मॉडल—ये दोनों किसानों, मजदूरों, आदिवासियों, मछुआरों, लघु स्तर के कारीगरों आदि सबके हित के विरोध में काम करने लगे। अतः इन समूहों की एकता राजसत्ता के विरोध में बनती चली गयी। जनता पार्टी के प्रयोग के बाद इस एकता को मजबूत करने तथा इसे विस्तार देने का काम छूट गया और जो भी राजसत्ता में आये, उन्होंने लोक की एकता के निर्माण की दिशा में कोई काम नहीं किया। लेकिन संपूर्ण क्रांति आंदोलन का एक बड़ा प्रभाव यह पड़ा कि उसके बाद के दौर में जनता के सभी बड़े आंदोलन राजनीतिक दलों के दायरे से बाहर हुए। लोकशक्ति का प्रकटीकरण लोक आंदोलनों के माध्यम से हुआ, किन्तु लोक के स्वराज्य के निर्माण का काम छूटता-सा चला गया।

बाद में दो और बड़ी घटनाएं हुईं, जिनसे लोक के स्वराज्य के निर्माण को धक्का लगा। एक साम्प्रदायिकतावादी शक्तियों का उभार तथा दूसरे पूंजी व पूंजीवादी बाजार की वैश्वीकरण समर्थक शक्तियों का गहरे तक पैठ बना लेना। भारत में इन दोनों शक्तियों ने गठजोड़ भी बना लिया। ध्यान देने योग्य बात यह है कि हिन्दू धर्म में गहरी आस्था रखते हुए भी गांधी सर्वधर्म समभाव का मंत्र दे रहे थे जो हिन्दू सम्प्रदायवादियों को कभी स्वीकार्य नहीं हुआ। उसी प्रकार लोक तक स्वराज्य ले जाने की बात पूंजीवादी व्यवस्था का निषेध करती थी। इसलिए पूंजीवाद एवं साम्प्रदायिकता के गठजोड़ के लिए सबसे बड़ी चुनौती गांधी आजीवन बने रहे, बने रहेंगे। गांधी की हत्या को उचित ठहराने तथा गोडसे को महिमामंडित करने का काम इसी गठजोड़ की शक्तियों के प्रतिनिधियों द्वारा समय-समय पर होता रहता है।

संपूर्ण क्रांति के संघर्ष का अगला कदम हमें इन शक्तियों के खिलाफ जनता को एकजुट करके आंदोलन खड़ा करने का होगा। हिन्दू सांप्रदायिकता तभी तक शक्ति पा रही है, जब तक यह पूंजी के वैश्विक केन्द्रीकरण व पूंजीवादी बाजार के वैश्वीकरण के पक्ष में है। हमें पूंजीवादी विकास के विकल्प में लोक के स्वराज्य की स्थापना के मॉडल के लिए संघर्ष को तेज करना होगा। इस संघर्ष का सामाजिक आधार युवा, वंचित, दलित, स्त्री, किसान, मजदूर, आदिवासी, मछुआरे, लघु उद्यमी एवं लोक समुदाय को बचाने वाली इकाइयां होंगी। **–बिमल कुमार**

अध्यक्ष की कलम से

सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन का पावन स्मरण

❑ महादेव विद्रोही

ऐतिहासिक गांधी मैदान

जेपी को 18 सितंबर 1943 को अमृतसर में गिरफ्तार कर लाहौर-जेल में रखा गया। 1945 में उन्हें वहां से स्थानांतरित कर आगरा सेण्ट्रल जेल भेजा गया। 11 अप्रैल 1946 को उन्हें वहां से रिहा किया गया। 19 अप्रैल 1946 को पटना के गांधी मैदान में अगस्त क्रांति के इस नायक का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने जेपी के सम्मान में गाया–

झंझा सोयी तूफान रुका, प्लावन जा रहा कगारों में,
जीवित है सबका तेज किन्तु, अब भी तेरे हुंकारों में।
हां, जयप्रकाश है नाम समय की, करवट का, अंगड़ाई का
भूचाल बवंडर के दावों से, भरी हुई तरुणाई का।

कहते हैं इससे पहले गांधी मैदान में इससे बड़ी कभी कोई सभा नहीं हुई। 5 जून 1974 की सभा ने 1946 के रेकार्ड को तोड़ा और 18 नवम्बर 1974 को जेपी ने फिर से अपने ही पिछले रेकार्ड को तोड़ा।

वह 5 जून

5 जून 1974 को जेपी के नेतृत्व में चिलचिलाती धूप में प्रतिबद्ध छात्रों और नागरिकों का जुलूस पटना के गांधी मैदान से 4-4 की लाइनों में निकला। जुलूस कितना बड़ा था, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जब आगे के लोग 6 कि.मी. दूर राजभवन पहुंचे तो अभी जुलूस गांधी मैदान से निकल ही रहा था। इसके अतिरिक्त मार्ग के मकानों की छतों पर, गलियों और सड़कों पर लाखों लोग इस ऐतिहासिक जुलूस का अभिवादन कर रहे थे।

राजभवन पहुंचकर जेपी छात्र नेताओं तथा कार्यकर्ताओं के साथ राज्यपाल से मिले। जेपी ने राज्यपाल से कहा–'संसार की कोई भी प्रजातांत्रिक सरकार एक जन-आन्दोलन में इस तरह की तोड़फोड़ और रुकावटें पैदा नहीं करती, जिस तरह की इस सरकार ने किया है।'

राज्यपाल भंडारे ने मजाक में कहा-ऐसा शायद इसलिए हो कि आपको प्रजातंत्र-विरोधी माना जाता है।' जेपी ने मुस्कुराकर कहा–'यह उनकी परिभाषा हो सकती है।'

राज्यपाल ने कहा–'लेकिन क्या जन प्रदर्शनों के जरिये विधानसभाओं को भंग करने की मांग कर सकते हैं?'

जेपी ने उत्तर दिया–'जब हमारे संविधान में विधायक को वापस बुलाने का कोई प्रावधान नहीं है तो जनता इसके अलावा क्या कर सकती है?'

करोड़ों हस्ताक्षरों के साथ राज्यपाल को मांग पत्र सौंप दिये गये। मांग पत्र में कहा गया कि सरकार संकीर्ण पार्टीगत हितों और स्वार्थों से ऊपर उठने में विफल हुई है। विद्यार्थियों ने जब भ्रष्टाचार, महंगाई और बेकारी को दूर करने के खिलाफ तत्काल कार्रवाई के लिए जनान्दोलन शुरु किया तो विधानसभा में अपने बहुमत और पुलिस तथा सेना की शक्ति से सरकार ने इस आन्दोलन को कुचलने की कोशिश की। मांग पत्र में विधानसभा को भंग करने की मांग की गयी क्योंकि वह सरकार के गलत कामों और अत्याचारों को रोकने में विफल हुई है।

हमला चाहे जैसा होगा,
हाथ हमारा नहीं उठेगा

5 जून 1974 का जुलूस राज्यपाल को ज्ञापन देकर जब लौट रहा था, तब विधायक फुलेना राय के सरकारी आवास से जुलूस पर गोली चलाई गयी, जिसमें कई लोग घायल हुए। घटना के बाद जब पुलिस ने उस स्थान पर छापा मारा तो डी.बी.बी.एल. बंदूक और 12 जीवित तथा 6 खाली कारतूस बरामद किये गये। जब गोली चली तब जुलूस में लाखों लोग थे। वे चाहते तो उस मकान की एक-एक ईंट बिखेर देते। पर आन्दोलन का नारा था।

हमला चाहे जैसा होगा,
हाथ हमारा नहीं उठेगा।

सभी आन्दोलनकारियों ने जेपी को दिये इस वचन का पालन किया और एक बड़ी अनहोनी टल गयी।

शाम को जेपी की विशाल सभा हुई। सबसे पहले वरिष्ठ साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु ने सन् 1946 में राष्ट्रकवि दिनकर द्वारा लिखा गीत 'झंझा सोयी, तूफान रुका' गाया। दिनकर होते तो इस मौके पर यह गीत स्वयं गाते पर 24 अप्रैल 1974 को ही उनका निधन हो गया था। गीत पूरा होने के बाद जेपी ने कहा–अब मेरे मुंह से आप हुंकार नहीं सुनेंगे। लेकिन जो कुछ मैं आपसे कहूंगा, वे विचार हुंकारों से भरे होंगे। वे क्रांतिकारी विचार होंगे, जिन पर अमल करना आसान नहीं होगा। अमल करने के लिए बलिदान देना होगा, कष्ट सहना होगा, गोली और लाठियों का सामना करना होगा, जेलों को भरना होगा, जमीनों की कुर्कियां होगी। जेपी ने अपने 90 मिनट के भाषण में आगे कहा-'यह क्रांति है मित्रों, और सम्पूर्ण क्रांति है। यह कोई विधानसभा के विघटन का ही आन्दोलन नहीं है। यह तो एक पड़ाव है जो रास्ते में है। हमें तो दूर जाना है, दूर जाना है।'

नया बिहार और नया भारत बनाना है

अपनी बात को विस्तार देते हुए जेपी ने कहा-'यह आन्दोलन छात्र-संघर्ष समिति की मात्र 10-12 मांगों की पूर्ति के लिए ही नहीं है, यह सम्पूर्ण क्रांति की शुरुआत है। इसके उद्देश्य बहुत दूरगामी हैं–भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना, जनता का सच्चा राज कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अंत करना, एक नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना, नया बिहार बनाना और अंततोगत्वा नया भारत बनाना है।''

कम्युनिस्टों की सत्तापरस्ती

5 जून से पहले 3 जून 1974 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने पटना में एक जुलूस निकाला था, उसमें 'अमेरिका को दे दो तार, जयप्रकाश की हो गई हार।' जैसे नारे लगे। इससे जेपी बहुत आहत हुए। उन्होंने इसका जवाब इन शब्दों मे दिया-

'बहुत दिनों से सार्वजनिक जीवन में हूं। मैं अमेरिका के बागान में मैंने काम किया, कारखानों में काम किया, जहां जानवर मारे जाते हैं, उन कारखानों में काम किया। जब

यूनिवर्सिटी में पढ़ता था तो छुट्टियों में काम करके इतना कमा लेता था कि सस्ते में हम लोग खा-पी लेते थे। एक कोठरी में कई लड़के मिल के रह लेते थे। वह लेनिन का जमाना था, वह ट्राटस्की का जमाना था। 1924 में लेनिन मरे थे और 1924 में ही मैं मार्क्सिस्ट बना था। दावे के साथ कह सकता हूं कि उस समय तक मार्क्सवाद के अंग्रेजी में जो भी ग्रंथ छपे थे, हम लोगों ने पढ़ डाले थे।

मैंने लेनिन से सीखा था कि आजादी की लड़ाई का नेतृत्व भले ही बुर्जुआ के हाथ में ही क्यों न हो, कम्युनिस्टों को उससे अलग नहीं रहना चाहिए। इसलिए हम अपनी आज़ादी के लिए लड़ रहे थे। गांधीजी जेल में थे, नेहरू जेल में थे और जो लोग आज हमें गाली दे रहे हैं, वे तब गद्दारी कर रहे थे।

कितनी लंबी जेल तुम्हारी

2 से 5 अक्टूबर 1974 को बिहार बंद का ऐलान था। इस दरम्यान लाखों लोगों को गिरफ्तार किया गया। बिहार के सारे जेलखाने (झारखंड सहित) भर गये थे। आन्दोलनकारियों को स्कूलों में रखा गया। लेकिन एक भी आन्दोलनकारी कभी वहां से भागा नहीं। सभी ने स्वेच्छा से अपनी गिरफ्तारी जो दी थी। तब सभी युवक-युवतियां जोश में यह नारा लगाते थे–

कितनी लम्बी जेल तुम्हारी, देख लिया और देखेंगे।
पुलिस हमारा भाई है, उससे नहीं लड़ाई है।

जयप्रकाश का बिगुल बजा तो जाग उठी तरुणाई है

आन्दोलन के दौरान जेपी की सभाओं के आरंभ में जानकी बहन रामगोपाल दीक्षित रचित गीत–'जयप्रकाश का बिगुल बजा तो जाग उठी तरुणाई है' गाती थीं। इस गीत की पंक्ति—

'सावधान, पद या पैसे से होना है गुमराह नहीं,
सीने पर गोली खाकर भी निकले मुख से आह नहीं।'

आती थी तो जेपी नौजवानों की ओर उंगली से इशारा करते हुए उन्हें आगाह करते थे।

4 नवम्बर को जेपी पर हमला

पूरे आन्दोलन में कवियों ने गजब की जनजागृति पैदा की। जेपी जब 4 नवम्बर 1974 को जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे तो उन पर सीआरपी के एक जवान ने लाठी से घातक प्रहार किया। जेपी गिर गये। इस घटना के बाद बाबा नागार्जुन ने लिखा–

एक और गांधी की हत्या होगी अब क्या?
बर्बरता के भोग चढ़ेगा योगी अब क्या?
पोल खुल गयी शासक दल के महामंत्र की?
जयप्रकाश पर पड़ी लाठियां लोकतंत्र की?

कवि सत्यनारायण ने लिखा—

जुल्म का चक्का और तबाही कितने दिन?
हम पर, तुम पर सर्द सियाही कितने दिन?
वे करते हैं, हम भरते हैं, ऐसा क्यों?
नहीं जानवर, हम चरते हैं ऐसा क्यों?
सच कहने की हुई मनाही कितने दिन?
ये गोली-बंदूक-सिपाही कितने दिन?

आपात्काल के साथ सेंसरशिप भी आयी। बिना सरकारी अनुमति के कुछ भी नहीं छप सकता था। पर कवियों की वाणी पर सेंसरशिप कैसे लगायी जा सकती थी। कवि हंसकुमार तिवारी ने गाया –

आग पर राख रख दी है किसी ने,
जुबां पर आंख रख दी है किसी ने।

उन दिनों 'धर्मयुग नाम का साप्ताहिक निकलता था। धर्मवीर भारती उसके संपादक थे। 4 नवम्बर की घटना के बाद उन्होंने 'मुनादी' नाम से एक कविता लिखी–

खलद खुदा का, मुलुक बाश्शा का
हुकुम शहर कोतवाल का .. .. ..
हर खासो-आम को आगाह किया जाता है
कि खबरदार रहें
और अपने-अपने किवाड़ों को अन्दर से
कुण्डी चढ़ाकर बन्द कर लें।
गिरा लें खिड़कियों के परदे
और बच्चों को बाहर सड़क पर न भेजें,
क्योंकि एक बहत्तर बरस का बूढ़ा आदमी
अपनी कांपती कमजोर आवाज में
सड़कों पर सच बोलता हुआ निकल पडा है।

कवि चन्द्रदेव सिंह ने लिखा–

जयप्रकाश –
शत-शत ज्वालामुखियों की-शिखा समुज्ज्वल।
जयप्रकाश-
नैराश्य-तिमिर में भ्रमित-मनुज का सम्बल।
जयप्रकाश-
भर रहा अचल विश्वास-किरण कण-कण में।
जयप्रकाश-
है कोटि-कोटि तरुणों की-जीवन भाषा।
जयप्रकाश-
बापू के सपनों की सच्ची परिभाषा।
जयप्रकाश-
प्रज्ज्वलित प्रलय-विप्लव का-प्रेरक गान।
जयप्रकाश –
साहस, क्षमता, करुणा का स्वर-अम्लान।
भ्रष्टाचरण-
समूल भस्म हो, दो ज्वाला का दान।
और चाहिए अग्नि देश को,
अभी और तूफान।

मंत्री का बेटा हो या मजदूर की संतान, सबकी शिक्षा एक समान

बिहार आन्दोलन का यह महत्वपूर्ण नारा था। जब 45 वर्ष पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि शिक्षा का निजीकरण एवं व्यापारीकरण लगतार बढ़ता जा रहा है। पिछले साल राजकोट नगर निगम ने उस स्कूल को बंद कर दिया, जिसमें कभी गांधीजी पढ़ते थे। उनका कहना है कि इस स्कूल में 10 वीं क्लास में पढ़नेवाले सभी के सभी बच्चे फेल हो गये हैं। यह किसकी जिम्मेवारी है? सरकारी स्कूलों की स्थिति जानबूझकर इतनी खराब कर दी गयी है कि निजी स्कूलों का व्यापार फलता-फूलता रहे। आम नागरिकों के मन में भी यह बात घर कर गयी है कि सरकारी स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चे आगे बढ़ ही नहीं सकते हैं। कुछ समय पहले इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में कहा था कि सभी सरकारी सेवकों के बच्चों को सरकारी स्कूलो में ही पढ़ना चाहिए। आजतक इस फैसले पर अमल नहीं हो पाया। कुछ साथियों ने इसके अमल के लिए धरना किया तो उन्हें पुलिसिया ज़ुल्म का सामना करना पड़ा।

जाति-पाति के बंधन तोड़ो, मानव को मानव से जोड़ो

बिहार आन्दोलन का यह भी एक महत्वपूर्ण नारा था। आज जब देखता हूं तो पाता हूं कि जातियां पहले से ज्यादा मज़बूत और संगठित हुई हैं। मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है, पर जातियों के प्रभाव तथा हिंसा को देखकर लगता है कि भारतीय समाज कहीं फिर से आदम युग की ओर तो नहीं लौट रहा है!

अभी-अभी लोकसभा चुनाव सम्पन्न हुए हैं। सभी पार्टियों ने उम्मीदवार खड़े करते समय जाति का पूरा-पूरा ख्याल रखा। पता नहीं वह दिन कब आयेगा जब मानव की पहचान उसकी जाति से नहीं, बल्कि मानवता के नाते होगी। ❑

गोडसे के डीएनए वालों, सावधान! जाग रहा है हिन्दुस्तान

–सर्व सेवा संघ

16 मई को मालेगांव ब्लास्ट की आरोपी प्रज्ञासिंह ठाकुर ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त कहा। प्रज्ञासिंह ठाकुर जो अपने को साध्वी कहती हैं, सन् 2006 में मालेगांव ब्लास्ट केस, जिसमें 6 लोग मरे थे और 100 लोग घायल हुए थे, की आरोपी हैं। उन पर Unlawful Activities Prevantion Act के अंतर्गत केस चल रहा है। अभी वे स्वास्थ्य के आधार पर जमानत पर हैं। वे 17 अप्रैल 2019 को भाजपा में शामिल हुईं। अब सवाल ये है कि यदि नाथूराम गोडसे शहीद था, तो क्या महात्मा गांधी देशद्रोही थे?

क्या यह गांधी पर पहला हमला है? तीन साल पहले मेरठ में हिन्दू महासभा ने गोडसे की मूर्ति बनाई थी, तब केन्द्र सरकार एवं सत्तारूढ़ पार्टी चुप रही। हरियाणा सरकार के मंत्री महात्मा गांधी के विरुद्ध विषवमन करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। वे कहते रहे हैं—'साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल' गाना शहीदों का अपमान है। 'जब से गांधी का नाम खादी के साथ जुड़ा, खादी उठ ही नहीं सकी, डूब गयी'। 'जिस दिन से रुपये पर गांधी की तस्वीर छपनी शुरू हुई, उसकी कीमत घटनी शुरू हो गयी। धीरे-धीरे हम उनकी तस्वीर नोटों पर से भी हटा देंगे।' आदि, आदि। 2017 में खादी ग्रामोद्योग आयोग के कैलेण्डरों एवं डायरी पर गांधी या खादी से संबंधित चित्र ही छपते थे। उन चित्रों को हटाकर मोदी की फोटो छाप दी गयी और कहा गया—मोदी गांधी से बड़ा ब्राण्ड है।

गांधी पुण्यतिथि 30 जनवरी 2019 को अलीगढ़ के नौरंगाबाद इलाके में हिन्दू महासभा की सचिव पूजा शकुन पांडेय ने गांधी की तस्वीर पर गोली मारी, खून बहाया, मिठाइयां बांटी और नाथूराम गोडसे अमर रहे के नारे लगाये। उन्होंने कहा—हम हर वर्ष इसी तरह गोली मारेंगे। 30 जनवरी 'गांधी बलिदान दिवस' को वे गांधी वध दिवस के रूप में मनाते हैं और गोडसे के चित्र पर फूल चढ़ाते हैं। भाजपा के अनेक मंत्री समय-समय पर गांधी के विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणियां करते रहते हैं। प्रधानमंत्री और भाजपा का नेतृत्व उसे चुपचाप सुनते हुए इन घटनाओं का मौन समर्थन करते रहते हैं।

सर्व सेवा संघ (अ. भा. सर्वोदय मंडल) इन कृत्यों की भर्त्सना करता है। हम मानते हैं कि हत्यारे का महिमामंडन हत्या का समर्थन करना है। जब मेरठ में गोडसे की मूर्ति लगाई जा रही थी, तब हमने इसे सर्वोच्च न्यायालय का अपमान मानते हुए इसके विरुद्ध मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखा था। हमारे आवेदन को सर्वोच्च न्यायालय ने मुम्बई उच्च न्यायालय को भेज दिया है जहां वह विचाराधीन है।

सर्व सेवा संघ (अ. भा. सर्वोदय मंडल) के अध्यक्ष महादेव विद्रोही और मंत्री चंदनपाल ने अलग-अलग जारी प्रेस विज्ञप्तियों में कहा है कि ये वही तत्व हैं, जिन्होंने इलाहाबाद का नाम बदले जाने के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मेरठ का नाम बदलकर गोडसे नगर करने की मांग की थी। मुख्यमंत्री ने इसके लिए एक भी शब्द बोलने की जुर्रत नहीं की।

नाथूराम गोडसे एक विकृत मानसिकता का नाम है। कुछ विक्षिप्त लोगों ने अपने राजनीतिक प्रपंच के लिए इस हत्यारे के नाम को अपना आधार बना रखा है।

हम मानते हैं कि गांधी के विरुद्ध यह साजिश सूरज के सामने धूल उड़ाने जैसा है। हम देश के सभी जागरूक नागरिकों से अपील करते हैं कि इस अपराधी एवं समाज-तोड़क प्रवृत्ति का हर स्तर पर जवाब दिया जाना चाहिए और सही तथ्यों से जनता को अवगत कराया जाना चाहिए। ❑

लोकसेवकों एवं सर्वोदय मित्रों के नवीनीकरण हेतु सर्व सेवा संघ का परिपत्र

हम सभी प्रदेश एवं जिला सर्वोदय मंडलों तथा कार्यसमिति के सदस्यों का ध्यान अधोलिखित बिन्दुओं की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं—

1. इस संबंध में हम आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि उन राज्यों में जहां प्रदेश सर्वोदय मंडल नहीं हैं, लेकिन सर्वोदय मित्र मंडल मौजूद हैं (जैसे दिल्ली, झारखंड, पश्चिम बंगाल) वहां सर्वोदय मित्र मंडल के संयोजक लोकसेवकों और सर्वोदय मित्रों के भरे हुए फॉर्म और शुल्क सीधे सर्व सेवा संघ कार्यालय, सेवाग्राम को नियत तारीख यानि 31 जुलाई 2019 तक भेजें।

2. उन राज्यों में जहां प्रदेश सर्वोदय मंडल हैं, हमें उम्मीद है कि प्रदेश सर्वोदय मंडल की कार्यकारिणी समिति ने लोकसेवकों की संपुष्टि के लिए 3 सदस्यीय संपुष्टि समिति का गठन कर लिया होगा। यदि इस समिति का गठन अभी तक नहीं हुआ हो तो कृपया तुरंत इसका गठन करें और समिति सदस्यों की सूची सर्व सेवा संघ कार्यालय को भेजें।

3. यदि किसी लोकसेवक का आवेदन राज्य संपुष्टि समिति अस्वीकृत करती है तो अस्वीकृति के कारणों के साथ आवेदन-पत्र सेवाग्राम कार्यालय को भेजें।

4. जिन प्रदेशों में न तो सर्वोदय मंडल हैं और न ही सर्वोदय मित्र मंडल, उन राज्यों के लोकसेवक/सर्वोदय मित्र अपने फॉर्म एवं शुल्क सीधे सर्व सेवा संघ कार्यालय, सेवाग्राम को भेज सकते हैं।

5. नवीनीकरण के लिये तारीख निर्धारित है। आशा है कि आपने लोकसेवक और सर्वोदय मित्र का नवीनीकरण करने हेतु कार्रवाई आरंभ कर दी होगी।

आपको फिर से याद दिलाना चाहता हूं कि नवीनीकरण की अंतिम ता. 30.6.19 है। सभी नवीनीकृत लोकसेवक तथा सर्वोदय मित्र के फॉर्म शुल्क के साथ 31.7.19 तक सेवाग्राम कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए। उसके बाद प्राप्त आवेदन-पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा।

महादेव विद्रोही
अध्यक्ष

चन्दन पाल
मंत्री

आपातकाल ने सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन को पटरी से उतार दिया

❑ रामदत्त त्रिपाठी

लोकनायक जयप्रकाश नारायण एक ऐसे बिरले क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अपने को क्रांति की किसी किताब या विचारधारा में बाँधकर नहीं रखा।वह पूरे जीवन सत्ता से दूर रहकर क्रांति की खोज और असली लोकराज की स्थापना के लिए सतत लगे रहे। इसीलए वह साम्यवाद से गांधीवाद और समाजवाद की यात्रा करते हुए सर्वोदय के पड़ाव पर ही नहीं रुके। जेपी ने अपने सपनों को शारीरिक सीमाओं में भी बाँधने नहीं दिया, चाहे जवानी में आज़ादी के लिए अंग्रेज़ों की हज़ारीबाग़ जेल की दीवार कूदकर निकलना रहा हो, या फिर बुढ़ापे में जर्जर स्वास्थ्य के बावजूद सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन का नेतृत्व और देश को आपातकाल की तानाशाही से मुक्त कराना रहा हो।

आज़ादी के क़रीब पचीस साल बीत जाने के बाद उन्होंने देखा कि नयी राजनीतिक व्यवस्था सामाजिक और आर्थिक बराबरी का लक्ष्य पूरा नहीं कर पायी। नौजवान बेरोज़गारी से और आम नागरिक महंगाई से परेशान हैं, सरकार में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार है और जवाबदेही तय करने की कोई व्यवस्था नहीं है। चुनाव बेहद खर्चीला हो गया है और भ्रष्ट अथवा ग़ैरजिम्मेवार जन प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का कोई क़ानून भी नहीं है। जेपी दहेज और ऊँच नीच जैसी सामाजिक बुराइयों से भी चिंतित थे। ये सारे सवाल जेपी को अंदर से कचोट रहे थे। जेपी समाज और व्यवस्था के हालात से बेचैन थे। उन्हें समाज में 1942 जैसे क्रांति के हालात नज़र आ रहे थे. जेपी से रहा नहीं गया। 1973 का अंत होते-होते जेपी ने युवाओं के नाम अपील जारी की—यूथ फ़ॉर डेमोक्रेसी। शायद उन्हें सर्वोदय जगत के लोगों की ताक़त और इच्छाशक्ति पर भरोसा नहीं था।

जेपी की अपील पर जगह-जगह युवा मंच का गठन हुआ। जेपी के आह्वान पर 1974 के उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में मतदाता शिक्षण एवं चुनाव शुद्धि का अभियान चलाया गया. चुनाव ख़र्च कम करने के लिए एक अनोखा प्रयोग करते हुए नागरिक सभाएँ आयोजित हुईं, जिनमें सभी उम्मीदवारों को एक मंच पर बुलाया गया. कुछ ही दिनों बाद गुजरात और फिर बिहार में छात्र आंदोलन शुरू हो गये, जिसमें जेपी अगुआ बने. ख़राब स्वास्थ्य के बावजूद आंदोलन को विस्तार देने के लिए जेपी आखिल भारतीय छात्र युवा सम्मेलन के लिए इलाहाबाद आए।

सम्मेलन के दूसरे दिन पी डी टंडन पार्क में जनसभा के समय पानी बरसने लगा. हम लोगों ने जेपी को छाता देना चाहा, कोई और नेता होता तो ख़ुशी से छाता ले लेता। लेकिन जो जनता के नेता होते हैं उनके एक एक संकेत विलक्षण होते हैं। जेपी ने छाता लेने से मना करते हुए पब्लिक से कहा कि 'आप भीग रहे हैं तो मैं भी भीगूँगा.' उनकी बात का जादुई असर हुआ. लोग हिले नहीं. भींगते हुए भाषण सुनते रहे. स्वतंत्रता आंदोलन का मुख्यालय होने के नाते देश की राजनीति में इलाहाबाद का अलग प्रभाव रहा है। इलाहाबाद में दो दिनों तक सम्पूर्ण क्रांति की हुंकार से जेपी आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान मिली. जेपी के वापस पटना जाते समय हम लोग उन्हें विदा करने रेलवे स्टेशन गये. जेपी ने कहा कि बीमार होने के कारण वह बिहार से बाहर ज्यादा समय नहीं दे सकते, इसलिए हम लोग उत्तर प्रदेश में आंदोलन को फैलाने के लिए पूरा समय दें.

वापस आकर मैंने और मेरे साथी भारत भूषण ने जेपी की अपील के अनुसार सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के लिए पढ़ाई छोड़ने का निश्चय किया। दोनों ने लॉ प्रथम वर्ष की परीक्षा छोड़ दी. जेपी के आह्वान पर हमारे जैसे सैकड़ों अन्य युवक-युवतियों ने भी आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लेने के लिए पढ़ाई छोड़ दी। सर्वोदय जगत में जेपी के आंदोलन को लेकर दुविधा थी. इसलिए जेपी ने अपने नायकत्व में छात्र युवा संघर्ष वाहिनी का गठन किया.

जून 1975 आते-आते आंदोलन चरम पर था। इस दरम्यान दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं. बारह जून उन्नीस सौ पचहत्तर को कांग्रेस

गुजरात विधान सभा चुनाव हार गयी और इलाहाबाद हाईकोर्ट ने चुनावी भ्रष्टाचार में इंदिरा गांधी की लोक सभा सदस्यता रद्द कर दी. ग़ैर कांग्रेस दल इलाहाबाद हाईकोर्ट के जजमेंट को आधार बनाकर इंदिरा गांधी को हटाने के लिए देशव्यापी आंदोलन चलाना चाहते थे। दूसरी ओर जेपी सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन को बड़े शाहरों से ग्रामीण इलाक़ों तक ले जाकर जन संगठनों के माध्यम से प्रत्यक्ष जनता सरकार का प्रयोग करना चाहते थे, जिसमें लोक समितियाँ राशन वितरण जैसे काम अपने हाथ में लें। जेपी हर चुनाव क्षेत्र में मतदाता परिषदें बनाकर लोक उम्मीदवार का भी प्रयोग करना चाहते थे, जो उनकी निर्दलीय लोकतंत्र की कल्पना का एक हिस्सा था। आंदोलन का एक और महत्वपूर्ण मुद्दा चुनाव ख़र्च में कमी और शासन तंत्र की जवाबदेही के लिए लोक आयुक्त की नियुक्ति थी।

दो दिन बाद यानी चौदह जून को जे पी सर्वोदय नेताओं की बैठक के लिए पटना से जबलपुर जा रहे थे. इलाहाबाद में ट्रेन बदलने के लिए उनके पास कुछ घंटों का समय था. संदेश मिलने पर हम कुछ लोग उनसे मिलने रेलवे स्टेशन पहुँचे। आगे क्या करना है, इस पर विचार विमर्श के दौरान जेपी का स्पष्ट कहना था कि विपक्षी नेता इस मौक़े पर इंदिरा गांधी के खिलाफ बड़े आंदोलन के लिए उन्हें दिल्ली बुला रहे हैं पर वह बिहार में सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन को निचले स्तर तक संगठित करना चाहते हैं, इसीलिए दिल्ली नहीं जाना चाहते.

जेपी सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वह इंदिरा गांधी की चुनाव में जनादेश लेने की चुनौती भी स्वीकार कर चुके थे। शायद इसलिए वह आंदोलन को सहयोग देने वाले विपक्षी नेताओं का दबाव टाल नहीं सके। जेपी को पटना से दिल्ली लाने के लिए जेपी के कुछ क़रीबी साथियों का भी इस्तेमाल किया गया। जेपी पर दबाव बढ़ा। वह दिल्ली आए।25 जून को जेपी ने रामलीला मैदान की ऐतिहासिक सभा में इंदिरा जी के त्यागपत्र को लेकर सत्याग्रह की और पुलिस तथा सैनिकों से ग़ैर क़ानूनी आदेश न मानने की पुरज़ोर अपील की.

कांग्रेस के कुछ सांसद इस बीच जे पी से मिले और उन्होंने पार्टी छोड़ने के संकेत दिए।इंदिरा जी पार्टी में बग़ावत की एक बड़े जनांदोलन की सम्भावना से घबरा गयीं। बिना मंत्रिमंडल में विचार किए उन्होंने रातोंरात इमर्जेंसी लगा दी। अगली सुबह देशव्यापी गिरफ्तारियाँ हुईं. हमने कुछ दिन भूमिगत रहते हुए सत्याग्रह और प्रतिरोध खड़ा करने की कोशिश की. लेकिन वह हो नही सका। आंदोलन को ज़ोरदार समर्थन देने वाला मीडिया सेंसर का शिकार हो गया। अधिकांश बुद्धिजीवी डरकर ख़ामोश हो गए। दिल्ली की सड़कों पर कोई बड़ा आक्रोश नही फूटा। लोगों की यह चुप्पी देखकर जेपी को गहरी पीड़ा और निराशा हुई।

21 जुलाई 1975 को चंडीगढ़ में अपनी डायरी में उन्होंने लिखा, 'मेरे चारों ओर मेरी दुनिया बिखर गयी। मुझे भय है कि मैं अपने जीवन काल में इसे दोबारा फिर से व्यवस्थित होते नहीं देख सकूँगा। हो सकता है, मेरे भतीजे और भतीजियाँ देख पाएँ। शायद स्वास्थ्य कमज़ोर होने से भी उनके मन में यह क्षणिक हताशा आयी होगी। पर कुछ ही दिन बाद उनका आत्मविश्वास लौट आया। 10 अगस्त को उन्होंने आपातकाल की समाप्ति के लिए आमरण अनशन का निश्चय किया। लेकिन अधिकारियों के मनाने पर संकल्प टाल दिया।

एक बार सरकार को लगा कि जेपी चंडीगढ़ अस्पताल में ही चल बसेंगे। शायद कुछ लोग ऐसा चाहते भी थे। पर कुछ अधिकारियों ने दिल्ली को समझाया कि अब मरणासन्न हालात में जेपी को क़ैद रखना ठीक नहीं है तो 16 नवम्बर को उन्हें रिहा कर दिया गया। जेपी आज़ाद होकर जहाज़ में बैठे तो उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया, 'मेरा स्वास्थ्य महत्वपूर्ण नही है। देश और लोकतंत्र का स्वास्थ्य ज्यादा ज़रूरी है। मैं उस महिला को परास्त कर लोकतंत्र बहाल करूँगा।' बाद में मुंबई के एक अस्पताल में बीबीसी से एक साक्षात्कार में जेपी ने कहा, 'वे लोकतंत्र को इस आसानी से तानाशाही में बदल देंगी, इसकी मैं कल्पना नही कर सकता था।' और खुलासा करते हुए जेपी ने कहा कि अगर यह कल्पना होती तो मै लगानबंदी, करबंदी इत्यादि सीधी कार्यवाही की तरफ़ जो जा रहा था, उतनी दूर तक नहीं जाता, दूसरे राजनीतिक क़दम उठाता, चुनाव की तैयारी करता। विपक्ष को एकजुट कर पार्टी बनवाता, हर सीट पर एक उम्मीदवार खड़ा करने की कोशिश करता।' जेपी ने स्पष्ट किया कि मैं स्वयं चुनावी राजनीति में नही जाता।

अस्पताल से जेपी ने जनता को संदेश दिया, 'जनता हिम्मत रखे। युवक डटे रहें। अभी अँधेरा लगता है, लेकिन भविष्य उज्ज्वल है। देश निकलेगा इस अंधेरे से।' बाद में जो हुआ वह सबको मालूम है। लोकतंत्र बहाल हुआ। आपातकाल में संविधान में हुए संशोधन रद्द हुए। लेकिन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव नहीं हुए। जनता पार्टी के नेताओं की आपसी लड़ाई से ढाई साल में ही इंदिरा गांधी वापस आ गयीं।

जेपी आंदोलन के दौरान उठे सारे मुद्दे इस समय भी भारत की जनता के सामने हैं। आरएसएस और जनसंघ के शीर्ष नेताओं ने जेपी को भरोसा दिलाया था कि वे मुसलमानों के खिलाफ़ साम्प्रदायिक राजनीति छोड़ देंगे।लेकिन जनसंघ के नए अवतार भारतीय जनता पार्टी ने कुछ ही सालों बाद साम्प्रदायिक राजनीति शुरू कर दी और आज़ादी से पहले का हिंदू राष्ट्र का अपना एजेंडा ज़ोर शोर से चालू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि आज देश में हिन्दू-मुस्लिम तनाव की नयी समस्या पैदा हो गयी है।

सम्पूर्ण क्रांति का सपना कहीं पीछे छूट गया है। जेपी आंदोलन से निकलकर जो लोग सत्ता में गए उन्होंने भी राजनीति में वही हथकंडे अपनाए जिनके खिलाफ़ जेपी ने संघर्ष छेड़ा था। हम इन्तज़ार करें कि 1974 की तरह फिर कहीं से चिंगारी उठे और कोई जेपी उसे सम्पूर्ण क्रांति जैसे एक बड़े सपने से जोड़कर समाज को झकझोर सके। ❑

बंद दिमाग से नहीं हो सकती संपूर्ण क्रांति

❑ अरविन्द अंजुम

संपूर्ण क्रांति का विचार सात तहखाने के नीचे किसी जादुई तिजोरी में रखी हुई न तो कोई बहुमूल्य निधि है, न ही किसी अभिलेखागार की किसी आलमारी के रैक में करीने से सजाकर रखी गयी कोई पुस्तक है, न ही किसी टीका-टिप्पणी से परे, बूझ-अबूझ पहेली की तरह कोई पवित्र ग्रंथ है और न ही क्रांतिशास्त्र का कोई चमत्कारिक तिलिस्म। यह तो सामान्य जन के रोजमर्रे के जीवन को बेहतर बनाने में मददगार एक वैचारिक प्रक्रिया है।

सोचने के बारे में हमारे सामने यह सवाल हमेशा तना रहता है कि हम सोचते कैसे हैं? सोचने के कई तरीके होते हैं। प्रतिक्रियावादी या प्रतिगामी जमातों का सोचने का आधार परंपरावादी तथा प्रगतिशील समूहों के सोचने का आधार वैज्ञानिक या वस्तुपरक होता है। प्रतिक्रियावादी समूह अपनी विचारभूमि की वजह से एक प्रकार से इतिहास के गोताखोर बन जाते हैं और टटोल कर वैसी चीजें एक मनगढ़ंत ब्रांडिंग के साथ सामने लाते हैं जिससे संबंधित जमात के अहंकार एवं जी को शांति मिले। जैसे परंपरावादी एक प्रकार के वैचारिक प्रदूषण से ग्रस्त हैं, वैसे ही परिवर्तनवादी भी एक प्रकार के डॉग्मा से त्रस्त हैं। अर्थात् ऐसे निर्धारित सिद्धांत जिन्हें प्रश्न किये बिना स्वीकारना होता है या फिर हर व्याख्या को उस चौखटे में उपलब्ध शास्त्रों के अनुमोदन के साथ पेश करना होता है ताकि वह एक अधिकृत बयान के रूप में मान्य कर लिया जाय। हालांकि हरेक नयी विचारधारा इसी डॉग्मा को तोड़ने का प्रयास करती है पर धीरे-धीरे कालक्रम में फिर वही अपने लिए एक नये किस्म का डॉग्मा भी गढ़ लेती है।

1974-75 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में प्रारंभ संपूर्ण क्रांति आंदोलन अत्यंत महत्त्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि वह स्थापित वैचारिक जड़ता के समक्ष प्रश्न खड़ा करता है। संपूर्ण क्रांति के वैचारिक वितान को स्पष्ट करते हुए जयप्रकाश नारायण ने कहा था—'एक बार लक्ष्यों को निर्धारित और मूल्यों को परिभाषित कर लेने के बाद यह विज्ञान का काम रह जाता है कि वह तय करे कि उक्त लक्ष्यों को उन मूल्यों की रूपरेखा के भीतर कैसे प्राप्त किया जाय। इसमें फिर मार्ग क्या हो, इस विषय में किसी तरह की कट्टरता नहीं बरती जा सकती। अगर लक्ष्य और मूल्य को हमेशा स्पष्ट रूप से सामने रखा जाय तो अनुभव के आधार पर वहां पहुंचने के मार्ग बदले जा सकते हैं।'' *(मेरी विचार यात्रा, भाग-2, पृ. 120)*

अर्थात् परिवर्तनकारी जमात के लिए लक्ष्य व मूल्य ही निर्णायक एवं महत्त्वपूर्ण हैं। पर यह एक दुःखद तथ्य है कि लक्ष्यों एवं मूल्यों की कमोबेश समानता के बावजूद इतने गहरे वैचारिक अंतर्विरोध दिखाई देते हैं, जिसकी वजह से एक-दूसरे के साथ आना मुश्किल जान पड़ता है। मसलन, मार्क्सवादियों या अम्बेडकरवादियों का एक परम लक्ष्य गांधी की शव-मीमांसा करना है। हालांकि हाल के दिनों में दक्षिणपंथियों की ओर से मिल रही चुनौतियों के चलते यह प्रवृत्ति थोड़ी मद्धिम हुई है। परंतु प्रगतिशील व मानवीय उद्देश्यों के लिए समर्पित समूहों के बीच व्यापक एकता के उद्देश्य से वैचारिक कट्टरता को निर्मूल करना आवश्यक है।

इस मायने में 74 आंदोलन या संपूर्ण क्रांति के आंदोलन का एक युगांतरकारी संदेश है—वाद या निर्धारित सिद्धांत से मुक्ति। इसलिए इस संदेश को ग्रहण करने वाले कार्यकर्ता खुले मन से उन सभी युगमानवों और उनके विचारों को सहज भाव से स्वीकार करते हैं, जिन्होंने दुनिया को बेहतर बनाने में अपना योगदान किया है। इसीलिए इस धारा में दीक्षित साथी महात्मा से महात्मा, (महात्मा फुले से महात्मा गांधी) पुणे से सेवाग्राम तक की पदयात्रा या फिर गांधी-अम्बेडकर संवाद जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। यही वजह है कि इस धारा में मार्क्स के बारे में कोई विरक्ति या वितृष्णा नहीं है। या फिर भगत सिंह या सुभाषचन्द्र बोस की अदम्य देश भावना या मुक्ति की छटपटाहट के प्रति आदर भाव सहज व्याप्त है। सभी विचारों को समझने के बाद एक समीक्षात्मक नजरिया संपूर्ण क्रांति आंदोलन के कार्यकर्ताओं में विकसित हुआ है। यह एक अपूर्व वैचारिक धरोहर है। इस धरोहर में भी कुछ विचलन जरूर है, फिर भी सम्यक रूप से, मूल रूप से यह एक मुक्त चिन्तन की सतत पद्धति है। यह पद्धति जितनी शक्तिशाली होगी, समान लक्ष्यों की जमातों की एकता भी उसी अनुपात में मजबूत होती जाएगी। क्योंकि सामाजिक परिवर्तन के प्रयोगों को मतवादों के चौखटे में बंद नहीं किया जा सकता। ❑

अगर कोई यह समझने लगे कि संपूर्ण क्रांति और ऐसे अन्य दूसरे जो भी काम करने होंगे, उन्हें सरकार कर देगी तो यह बिलकुल गलत होगा। संपूर्ण क्रांति की कल्पना में तो यह है की सारे समाज में परिवर्तन हो, समाज के हर अंग में हो, व्यक्ति के जीवन में हो, सामाजिक संस्थाओं के रूप-रंग, चाल-चलन में हो, उनके संघटन और कार्य-पद्धति में हो, इन सबमें परिवर्तन हो। इसके लिए जरूरत है ऐसे लोगों की, जो जनता के बीच निःस्वार्थ भाव से काम करें, जनता को जागृत करें। शासन भी जितना सहायक हो सके, उतना हो। लेकिन यह बात मत भूलिये कि यह काम कार्यकर्ताओं का है, क्रांति में विश्वास रखने वाले हर युवक का है, जनता का है। जन-क्रांति जनता के ही सहयोग से और उसके हाथों होती है, इसलिए ऐसी झूठी आशा आपके दिल में पैदा न हो कि आपको कुछ नहीं करना है, यह सब सरकार का काम है। समाज-परिवर्तन का काम तो समाज में ही हो सकता है। उसका जो मुख्य साधन होगा, वह होगा लोगों को समझाना। समझाकर उनको बदला जाय। जहां-जहां विरोध खड़ा होता है, निहित स्वार्थों की तरफ से, वहां वह एक सत्याग्रह का, संघर्ष का रूप ले सकता है। कानून बना देने से कोई समाज नहीं बदलता। संपूर्ण क्रांति सरकारी शक्ति से नहीं, जन-शक्ति से ही संभव हो सकती है।

–जयप्रकाश नारायण

एक सपना था जो शब्द बनकर रह गया

❑ संतोष भारतीय

संपूर्ण क्रांति शब्द लोकनायक जयप्रकाश का दिया हुआ शब्द है. यह शब्द उनके जीवन का आखिरी सपना भी था. इस शब्द ने सामान्य छात्र आंदोलन को संपूर्ण समाज के बदलाव के आंदोलन में बदल दिया था. तभी जयप्रकाश देश को बताया था कि कैसे एक जन आंदोलन देश का भाग्य बदलने की ताकत रखता है. जयप्रकाश के साथ प्रकृति ने अन्याय किया और उन्हें इतना बीमार कर दिया कि वे जनता सरकार बनने के बाद संपूर्ण क्रांति के लिए आंदोलन प्रारंभ करने का सपना मन में लिये हुए ही इस दुनिया से चले गए. अपने आखिरी दिनों में उन्होंने 'रविवार' को दिये एक इंटरव्यू में कहा था कि अगर मुझ में ताकत होती तो मैं एक नया आंदोलन अवश्य छेड़ता.

हमारे इतिहास की या कहें कि सामाजिक आंदोलन की यह विडंबना है कि आंदोलन का नायक या आंदोलन का स्वप्न द्रष्टा यदि नहीं रहता तो वह आंदोलन वहीं रुक जाता है. यही जयप्रकाश के साथ हुआ. उनके समाज को बदलने वाले सपने को उनके ही साथी सत्ता प्राप्ति का साधन बना बैठे. जो सत्ता में नहीं गए वह आपसे संघर्ष में या कहें तो ईर्ष्या के जाल में उलझ गए. संपूर्ण क्रांति आंदोलन एक सपने की जगह एक शब्द में बदल गया.

यही आचार्य विनोबा भावे के साथ हुआ. ग्राम स्वराज्य का आंदोलन उनके जाते ही समाप्त हो गया. अब तो ग्राम स्वराज्य की सही अवधारणा बताने वाले भाष्यकार भी समाप्त हो रहे हैं . जब तक विनोबा और जयप्रकाश हमारे बीच थे तब तक गांधी का नाम और उनका सपना हमारे बीच था, लेकिन जयप्रकाश के जीवित रहते ही उनका सपना उनके ही लोगों ने धूमिल कर दिया. इसे नियति की त्रासदी ही कहा जा सकता है.

जब हम नए समाज की कल्पना करते हैं, तब हमारे सामने गांधी का हिंद स्वराज विनोबा का ग्राम स्वराज्य और जयप्रकाश की संपूर्ण क्रांति की अवधारणा मिलकर एक संपूर्ण चित्र बनाते हैं. इस संपूर्ण चित्र के बिना भारत में समाज परिवर्तन नहीं हो सकता.77 के बाद कई सत्ता परिवर्तन हुए लेकिन समाज परिवर्तन नहीं हुआ. समाज न केवल खोखला हुआ, बल्कि समाज के रूप में उसकी शक्ति भी खोखली होती चली गई. आज समाज की न तो नैतिक शक्ति है और न ही राजनीतिक शक्ति, सब खंड खंड हो रहा है.

लोकनायक जयप्रकाश की संपूर्ण क्रांति की अवधारणा समाज को सशक्त करने और सत्ता राजनीति को नियंत्रित कैसे करें, इसका दस्तावेज है. राजनीति के ऊपर अगर समाज का या दूसरे शब्दों में जनता का नियंत्रण या दबाव नहीं होगा तो सत्ता अनियंत्रित हो जाएगी और लोकतंत्र के सभी अंगों को भ्रष्ट कर देगी. इस स्थिति का विकल्प संपूर्ण क्रांति की अवधारणा में है.

सबसे अफसोस की बात यही है कि जो जयप्रकाश के साथ रहे, बाद में वे सत्ता में चले गए और जो सत्ता में नहीं गए, उन्होंने भी कभी संपूर्ण क्रांति के शास्त्र को पढ़ने, उसका मनन करने और उसे व्यावहारिक रूप में उतारने की कोई कोशिश नहीं की. शायद हर महापुरुष के साथ ऐसा ही होता है।

यह सवाल सब के साथ साथ स्वयं से भी है. जो लोक नायक का नाम लेते हैं, अभी भी उनके पास समय है कि वे संपूर्ण क्रांति की अवधारणा के ऊपर विचार करें, विश्वास करें, चिंतन करें और उसे समाज के बीच ले जाएं. वक्त थोड़ा है लेकिन अभी समाप्त नहीं हुआ है. चुनौती तो है, देखते हैं इसे कौन स्वीकार करता है। ❑

पाठक का पत्र

सर्वोदय जगत के भूदान अंक में प्रकाशित महादेव भाई का आलेख 'देख तेरे भूदान की हालत क्या हो गयी बाबा' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और यथार्थ लगा। हम सभी सर्वोदय विचारमार्गियों को यह आलेख जरूर पढ़ना चाहिए और अपनी आत्मा की तलाश करनी चाहिए। उसके अगले पृष्ठ पर गौरांग जी का आलेख 'वर्तमान के संदर्भ में भूदान' भी वर्तमान परिस्थितियों में बहुत महत्त्वपूर्ण आलेख है। ऐतिहासिक तौर पर, और आत्मावलोकन के तौर पर यह दोनों ही आलेख हमें खुद के भीतर झांकने को विवश करते हैं कि यह सब क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है। यह हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है कि भूदान की जमीनों का वास्तविक जरूरतमंदों में न्यायोचित वितरण हो सके। क्या हम इसके लिए सरकारों पर दबाव बनाने के निमित्त कोई राष्ट्रीय आंदोलन नहीं खड़ा कर सकते? अभी तो देश चुनावों से गुजर रहा है लेकिन मुझे लगता है कि नयी सरकार के गठन के बाद हमें इस दिशा में अवश्य सोचना चाहिए। इस बीच मेरे दिमाग को एक और प्रश्न मथ रहा है कि हमें ऐसी संसद की जरूरत किसलिए है जो अपराधियों से भरी हो? जिसके सदस्य संसद में बैठे और सोते हुए हम पर शासन करें? पिछली संसद में लगभग 34% अपराधी थे। देखने की बात होगी कि नई संसद में इनकी संख्या कितनी होती है। **–ई. पी. मेनन**

उत्तर

भूदान अंक में प्रकाशित उक्त दो आलेखों पर आपकी त्वरित प्रतिक्रिया के लिए हार्दिक आभार। भूदान में मिली जमीनों के न्यायोचित वितरण के संदर्भ में आपकी चिन्ताओं से हम सभी सहमत हैं। संसद में आपराधिक प्रतिनिधित्व का विषय भी राष्ट्रीय चिन्ता का विषय है। सर्व सेवा संघ इन विषयों पर सतत संघर्षरत है और इन समस्याओं के सम्यक समाधान की दिशा में निरंतर चिन्तनरत व क्रियाशील भी है। कृपया संबल बनाये रखें। **–सं.**

आंदोलन

क्रांतिकारी साबित हुआ भूमि संघर्ष

❑ अनिल प्रकाश

कई लोगों को गांधी का रास्ता अव्यावहारिक लगता है। जब मैं स्कूल का छात्र था तभी मैंने गांधी जी की आत्मकथा (सत्य के प्रयोग) पढ़ी थी और उससे बहुत प्रभावित हुआ था। उस वक्त मैंने उनकी सीखों को जीवन में उतारने की कोशिश की तो असफलता, उपहास और निराशा झेलनी पड़ी। तब मुझे भी ऐसा लगने लगा था की गांधी का रास्ता शायद व्यावहारिक नहीं है। मेरा किशोर मन समाज परिवर्तन के सपने लिये नए रास्ते की तलाश में जुट गया। 1968-69 का साल रहा होगा।मैं कॉलेज की पढ़ाई के लिए गांव से मुजफ्फरपुर आ चुका था। तब मुफ्फरपुर मुसहरी प्रखंड और मुंगेर के सूर्यगढ़ा प्रखंड में सशस्त्र नक्सलबाड़ी आंदोलन चरम पर था। नक्सलवादियों ने जब कुछ सर्वोदयी कार्यकर्ताओं की हत्या करने का इरादा जाहिर किया और उनकी सूची जारी की तो जयप्रकाश नारायण अपनी पत्नी प्रभावती देवी के साथ मुसहरी पहुंचे।उनकी तरुण शांति सेना भी पहुंची।ये लोग अहिंसक क्रांति का संदेश देने लगे।तब मुजफ्फरपुर की दीवारों पर दो तरह के नारे लिखे होते थे।नक्सलवादी सशस्त्र क्रांति में विश्वास करनेवालों का नारा था- 'खून खून पूंजीपतियों का खून'। दूसरी ओर जेपी की तरुण शांति का नारा लिखा होता था- 'जुल्म करो मत,जुल्म सहो मत'।उस समय हमारा किशोर मन इन दोनों प्रकार के नारों से प्रभावित हुआ था। जयप्रकाश नारायण ने सशस्त्र संघर्ष में लगे लोगों से बात शुरू की। वे गांव गांव घूमने लगे,जमीनी सच्चाइयों को अपनी आंखों से देखा।उन्होंने महसूस किया कि सामाजिक आर्थिक विषमता और शोषण के रहते समाज में शांति सम्भव नहीं है। परिवर्तन के लिए शांतिमय जन संघर्ष जरूरी है।मुसहरी के अनुभव से जेपी को भी एक नया रास्ता मिला और उन्होंने 'फेस टू फेस'(आमने सामने) नामक एक पुस्तिका लिखी।नई पीढ़ी के लोग यह जानकर चौंक सकते हैं कि जेपी की उस पुस्तिका की भूमिका इंदिरा गांधी ने लिखी थी।इस पुस्तिका से मेरे जैसे युवाओं को आगे का रास्ता दिखाई पड़ा था।

1977-78 में हम गांधी की इज्जत तो करते थे लेकिन उनको क्रांतिकारी नहीं मानते थे। लेकिन जब सामाजिक वास्तविकताओं से रू-ब-रू होने लगे और जमीनी संघर्षों में जूझने लगे तो समझ में आने लगा कि जिस रास्ते पर हमलोग बढ़ रहे हैं, वह तो गांधी का ही रास्ता है।बिहार में भूमि पर उन भूमिपतियों का नाजायज कब्जा रहा है जो खुद खेती नहीं करते।बिहार में चली आ रही जातिवादी मानसिकता और सामंती शोषण का यह बड़ा आधार रहा है।बिहार की आर्थिक तरक्की में भी यह बहुत बड़ी बाधा रही है।आजादी की लड़ाई के दौरान स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने भूमिहीन किसानों की लड़ाई शुरू की थी।समाजवादियों और कम्युनिस्टों ने भी जमीन की लड़ाई में बड़ी भूमिका निभाई थी। तब ये सब लोग कांग्रेस के अंदर ही स्वतन्त्रता के आंदोलन के महत्वपूर्ण हिस्से थे।आजादी के बाद भी पूरे बिहार में भूमि आंदोलन चला लेकिन भूमि का पुनर्वितरण बहुत कम हुआ। पूर्णिया में नक्षत्र मालाकार ने शोषक जमींदारों की नाक में दम कर रखा था। उस समय भूमि आंदोलन का विरोध करने वाले मजाक उड़ाते थे-'धन और धरती बंट के रहेगी,हम्मर तोहर छोड़कर'।

यह एक कड़वी सच्चाई है कि उस जमाने में भूमि आंदोलन चलाने वाले बड़े नेताओं ने अपनी खुद की सीलिंग से फाजिल जमीन भूमिहीन किसानों के बीच नहीं बांटी। एकमात्र अपवाद जयप्रकाश नारायण थे। आजादी के काफी पहले एकबार उन्हें बिहार के गया जिले में भूमि आंदोलन का नेतृत्व करना था। पहले वे अपने गांव गए। उन्होंने अपनी 400 बीघे पुश्तैनी जमीन अपने गांव के 400 भूमिहीन किसानों के बीच बांट दी उसके बाद ही वे भूमि आंदोलन का नेतृत्व करने गए। यह बात 1975 की शुरुआत में इस लेखक को वहां के गांववालों ने बताई थी। ज्यादातर नेताओं की कथनी और करनी का यह अंतर भूमि आंदोलनों की असफलता का एक महत्वपूर्ण कारण रहा है।विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के दौरान बिहार(तब झारखण्ड भी बिहार में ही था) में लगभग 22 लाख एकड़ जमीन दान में मिली थी।लेकिन बहुत कम जमीन भूमिहीनों को मिल सकी।बहुत सी जमीन नदी या पहाड़ के रूप में थी, कुछ बंजर थी।आज भी लाखों भूदान किसान ऐसे हैं, जिन्हें जमीन का पर्चा तो मिला लेकिन भूदाताओं ने अपना कब्जा नहीं छोड़ा या फिर से कब्जा कर लिया।ऐसी परिस्थिति में 1967 के आसपास पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी से सशस्त्र नक्सलवादी आंदोलन शुरू हुआ जो बाद में बिहार तथा देश के अन्य हिस्सों में भी फैल गया था। लेकिन देश की जटिल सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संरचना को न समझ पाने और

उसके अनुरूप रणनीति विकसित न कर पाने के कारण यह सीमित प्रभाव ही डाल सका और धीरे धीरे सिमट गया। भारतीय समाज सशस्त्र संघर्ष का तनाव ज्यादा समय तक स्वीकार नहीं कर पाता। यह धारणा भी सही नहीं है कि पुलिस की सख्ती से ही ऐसे संघर्षों को दबाया जा सकता है।

बिहार में मठों, मंदिरों के नाम पर भी लाखों एकड़ जमीन पर भूमिपतियों का कब्जा रहा है।ऐसा ही एक मठ है बोधगया का शंकर मठ।1978 में इस मठ के महन्थ थे धनसुख गिरी। लेकिन मठ की असली सत्ता मठ के मैनेजर जयराम गिरी के हाथों में थी।जयराम गिरी बिहार सरकार में धार्मिक न्यास मंत्री रह चुके थे।उनका बड़ा रुतबा था।जब भी गया जिले में कोई नया एसपी या डीएम आता तो मठ में हाजिरी जरूर लगाता।मठ की ओर से उन्हें दूध पीने के लिए एक गाय दी जाती।इस मठ के कब्जे में लगभग 10 हजार एकड़ जमीन 22 जाली ट्रस्टों और 448 नकली नामों (बेनामी) पर थी।भूमिहीन मजदूर (जो ज्यादातर भुइयां जाति के थे)का भयानक शोषण हो रहा था।जैसे ही किसी की बेटी या बेटा 8-10 साल का होता, उस दिन उसकी शादी कर दी जाती। शादी के लिए मठ से कुछ अनाज और पैसा मिलता था, जिसके एवज में लड़का लड़की दोनों को मठ का बंधुआ बना लिया जाता था।खेत में दिनभर की मेहनत के बाद 3 सेर (कच्ची) यानी लगभग एक किलो 450 ग्राम धान मिलता था। साथ में आधा सेर (कच्ची) यानी 225 ग्राम भूसे सहित धान का सत्तू मिलता था।इसके साथ महुआ खरीदकर शराब बनाने के लिए थोड़ा पैसा मिलता था, जिसे पियांकी कहते थे।कड़ी धूप,बरसात या कड़ाके की ठंढ में दिनभर सुअरें चराने के बाद भुइयां लोग मिट्टी की हंड़िया में घर की बनी शराब पीकर अपनी पत्नियों, बच्चों को पीटते और रात में चोरी करते। अपने ऊपर हो रहे अन्याय, शोषण पर सोचने की उनकी शक्ति कुंठित कर दी गई थी। इतना ही नहीं, हर गांव में मठ की ओर से भुइयां जाति का ही एक ओझा रखा जाता था। जब किसी के पेट में तेज दर्द होने लगता, उल्टी होती, किसी को तेज बुखार होता तो ओझा को बुलाया जाता। ओझा एक बोतल दारू और एक मुर्गा लेता और देवता या भूत खेलाने का नाटक करता। वह बताता कि इस आदमी ने मठ की जमीन से फसल चुराई है इसीलिए इसे देवता या भूत ने पकड़ लिया है। ओझा भूत छुड़ाता। ऐसा था मठ के शोषण का चक्रव्यूह।

ऐसी परिस्थिति में हमलोगों ने जब छात्र युवा संघर्ष वाहिनी और मजदूर किसान संघर्ष समिति की ओर से मठ के शोषण के खिलाफ आंदोलन की तैयारी शुरू की तो गांव में मीटिंग करना भी मुश्किल था।शाम में जब बैठक शुरू होती तो नशे में लोग आपस में लड़ाई झगड़ा करने लगते और मीटिंग भंग हो जाती। ऐसे में शराब के खिलाफ अभियान चलाना पहली जरूरत बन गया। महिलाएं और बच्चे शराब से त्रस्त थे।वे संगठित हुए और अपने अपने मिट्टी के घरों से शराब की हंडिया निकाल निकालकर फोड़ने लगे।बोधगया के बगल के गांव मस्तीपुर में जिस दिन यह शुरू हुआ, उस दिन शराब की लतवाले पुरुष अपनी अपनी पत्नियों, बच्चों को पीटने लगे। लेकिन हंड़िया का फोड़ना नहीं रुका। देखते ही देखते हंड़िया फोड़कर शराब बन्द करने का यह सिलसिला उस इलाके के सैकड़ों गांवों में फैल गया। जल्दी ही हमारे साथियों की समझ में आ गया कि गांधी के जिस नशाबंदी के कार्यक्रम को हम महज एक सुधारवादी काम समझते थे, वह कितना क्रांतिकारी साबित हुआ।अगर शराबबंदी और ओझा गुनी के अंध विश्वास को समाप्त करने का सांस्कृतिक अभियान नहीं चला होता तो शोषण के शिकार लोग न तो संगठित हो पाते और न मठ के शोषण को उखाड़कर समाप्त कर पाते। इस शांतिमय भूमि आंदोलन में 167 मुकदमे हुए।बड़ी संख्या में लोग जेल गए।अहिंसक प्रतिरोध करते हुए रामदेव माझी और पांचू माझी मठ के गुंडों की गोली खाकर शहीद हुए, कई घायल भी हुए। लेकिन अंततः 10 हजार एकड़ जमीन पर भूमिहीन किसानों का कब्जा हुआ।बाद में सरकार ने पुरुषों के नाम जमीन के पर्चे दिए।इन सरकारी पर्चों को इस मांग के साथ वापस कर दिया गया कि महिलाओं के नाम दिए पर्चे ही स्वीकार होंगे। कुछ दिनों की जद्दोजहद के बार सरकार ने महिलाओं के नाम जमीन के पर्चे दिए। छोटी उम्र में होनेवाली शादियों पर सामाजिक रोक लगी। बाद में इस आंदोलन का प्रभाव यह हुआ कि पूरे गया जिले के भूमिहीन किसानों ने लगभग 15 हजार एकड़ अतिरिक्त भूमि बड़े भूपतियों के कब्जे से मुक्त कराई। इस भूमि सत्याग्रह के दौरान यह भी समझ में आया कि जातियों की विविधता वाले हमारे समाज में अहिंसक संघर्ष का रास्ता ही व्यावहारिक है।

आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग से जूझ रही है। प्रकृति की खूबसूरती उसकी विविधता में अंतर्निहित है।भौगोलिक विविधता, मौसम की विविधता,एवम वनस्पतियों और जीवों की जैव विविधता पर प्रकृति का अस्तित्व टिका है। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ जब बहुत बढ़ जाती है तब उसका रौद्र रूप प्रकट होने लगता है।गांधी जी ने इसकी चेतावनी काफी पहले दी थी। इसके साथ ही भारत की सैकड़ों जातियों, धर्मों, समुदायों, उनके रंग रूप की विविधता में इसकी खूबसूरती और ताकत अंतर्निहित है। जो लोग इसे नहीं समझते वे इसे एक रंग में रंगने की नादान कोशिशें कर रहे हैं। आशा रखनी चाहिए कि लोग सचेत होकर देश और समाज को गड्ढे में जाने से बचा लेंगे। ❑

संपूर्ण क्रांति के दर्शन का आशय

❑ सुशील कुमार

5 जून 1974 के बाद से बिहार आन्दोलन के स्वरूप में बदलाव आना शुरू हो गया. महज प्रतिरोध के आन्दोलन की दिशा गहराई लेने लगी. सम्पूर्ण क्रांति के दर्शन पर देश भर में बहस होने लगी. इसके औचित्य और अनौचित्य पर चर्चाएं होने लगीं. बहुत सारे राजनेता और बुद्धिजीवी इसे महज एक नारा बता रहे थे. लेकिन आन्दोलन के निरंतर चल रहे कार्यक्रमों से यह दर्शन परिभाषित होता चला गया.

सम्पूर्ण क्रांति के दर्शन की मुख्य विशेषता और अन्य क्रांति प्रयोगों से इसके अंतर पर गहनता से विचार करना जरूरी है. ऐसा नहीं है कि पहली बार इस लेख में ही इस विन्दु पर विचार हो रहा है. पर सम्पूर्ण क्रांति की घोषणा के 45 साल बाद एक बार पुनः उसे दुहराना जरूरी प्रतीत होता है.

पहली विशेषता इस क्रांति दर्शन की थी, जेपी द्वारा उद्घोषित 'सम्पूर्ण क्रांति के सात आयाम'. वे आयाम थे - सामाजिक क्रांति, आर्थिक क्रांति, शैक्षणिक क्रांति, वैचारिक क्रांति, आध्यात्मिक क्रांति, सांस्कृतिक क्रांति और औद्योगिक क्रांति. क्रांति के इन सात आयामों को चिन्हित करने का आशय था कि इन सारे आयामों को ध्यान मे रखते हुए आन्दोलन को आगे बढ़ाना होगा. यानी एक तरह से यह दर्शन पूर्व की क्रांतियों की उन प्रक्रियाओं का नकार था, जिनका मानना था कि आर्थिक संबंधों में बुनियादी बदलाव कर देने मात्र से सारी समाजार्थिक व्यवस्था खुद ब खुद बदल जाती हैं. दुनिया में हुई क्रांतियों का गहराई से अध्ययन करने के पश्चात् जेपी इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि दुनिया में विशेष कर भारत जैसे समाज में आर्थिक क्रांति को लक्ष्य बनाकर व्यापक जनोन्मुखी समाजिक परिवर्तन ला पाना असंभव है. इसलिए क्रांतियों के इतिहास को सम्पूर्ण क्रांति के आह्वान से उन्होंने आगे की दिशा दिखायी.

सम्पूर्ण क्रांति की दूसरी विशेषता उन्होंने बतायी - 'क्रांति संपूर्ण और सतत'. यानी कि क्रांति कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है कि एक बार जोर लगा कर परिवर्तन ला दिया फिर निश्चिंत हो जायें. क्रांति सम्पूर्ण होने पर भी सतत् चलती रहेगी, यह ध्यान में रखना होगा. एक बार परिवर्तन के बाद आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए नये संदर्भों में समाज को हमेशा जागरूक और संगठित रहना होगा. सिर्फ राजसत्ता के बल पर जनता के मनोनुकूल व्यवस्था बन जाने की बात पर जेपी को यकीन नहीं था. सामाजिक परिवर्तन को बाधित करने वाली या अलोकतांत्रिक (तानाशाही) सत्ता को तो हटाना ही होगा. लेकिन क्रांति और जनता का दायित्व यहां समाप्त नहीं हो जाता.

संक्षेप में कहें तो संपूर्ण क्रांति का दर्शन न सत्तानिरपेक्ष है, न ही सत्तासापेक्ष. परिस्थिति के अनुसार सत्ता निरपेक्षता और सत्ता सापेक्षता की दिशा तय किया जाना सम्पूर्ण क्रांति के दर्शन का एक अहम पहलू है.

क्रांति की निरंतरता को बनाये रखने के उद्देश्य से ही उन्होंने गैरदलीय युवा संगठन-छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी और लोक समिति नामक संगठन का आह्वान किया था. अपने जीवन काल में ही उन्होंने छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी के सफल प्रयोग का नमूना बोधगया के शांतिमय भूमि संघर्ष के रूप में देख भी लिया था और उसे आगे बढ़ाने का आह्वान भी किया था.

विश्व की क्रांतियों की गहन समझ जेपी को थी. रूसी क्रांति और उसके बाद वहां की राजसत्ता के चरित्र, लैटिन अमेरिका और क्यूबा की क्रांति और उसके निष्कर्ष सामने स्पष्ट थे. उनके समक्ष एक यक्ष प्रश्न था - 'अच्छाई की प्रेरणा (Insentive to goodnes) कहां से आयेगी'? इसी गहन प्रश्न के शोध का परिणाम था कि उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति का सिद्धान्त प्रतिपादित किया. इस क्रांति की प्रक्रिया के सबंध में कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं -

1. शान्तिमय वर्ग संघर्ष के संबंध में उन्होंने कहा कि भूमिहीनों और कमजोर तबकों के द्वारा जब तक संगठित होकर अपने अधिकारों का दावा नहीं किया जायेगा, तब तक उन्हें कुछ नहीं हासिल होगा. इस प्रकार गरीबों की संगठित ताकत और युवाओं का साथ मुझको मिले तो मैं एक व्यापक परिवर्तन की कल्पना करता हूँ. लेकिन यह वर्ग संघर्ष पूर्णतः शांतिमय होगा.

2. दुनिया में तब तक सम्पन्न क्रांतियां मार्क्सवाद के आधार पर हुई थीं। इन क्रांतियों का दर्शन भौतिकवादी था. इन क्रांतियों की सीमाओं को जेपी ने पहचाना था. अच्छाई की प्रेरणा का प्रश्न यहीं से उनके मन में उठा होगा. इसी कारण सम्पूर्ण क्रांति के आयामों में उन्होंने नैतिक और आध्यात्मिक क्रांति को शामिल किया था. जे पी का अध्यात्म ईश्वरीय अध्यात्म नहीं था. उनके अध्यात्म का आशय था मनुष्य के अपने अंदर झांकने का अभ्यास, आत्मचिंतन और आत्मालोचना. यहां यह याद रखना चाहिए कि क्यूबा की क्रांति के प्रसिद्ध नेता 'चेग्वेरा' ने भी क्रांतिकारी और समाजवादी चेतना की बात की थी. रूसी समाजवाद की उन्होंने कई बिन्दुओं पर आलोचना की थी.

3. सम्पूर्ण क्रांति के लिए शांतिमयता को उन्होंने अनिवार्य बताया था. हिंस-अहिंसा की शास्त्रीय बहस से अलग शांतिमयता को उन्होंने अलग से व्याख्यायित किया था. उनके पहले हिंसा को क्रांतियों का अन्योन्याश्रित अंग मना जाता था. दुनिया के लिए यह एक अनोखा दर्शन था.

4. क्रांति का अगुआ दस्ता युवा होगा, यह पहली बार जेपी ने ही प्रतिपादित किया. इसके पहले की क्रांतियों में सर्वहारा और मजदूर वर्ग को ही अगुआ दस्ता (van-guard) माना जाता रहा था. ❑

समाज को भरोसा दिलाना होगा

❑ मधुकर

45 साल पहले जयप्रकाश नारायण ने ऐतिहासिक गांधी मैदान (पटना) में संपूर्ण क्रांति का उद्घोष किया था। उनके अत्यन्त करीबी राजनीतिक मित्र आचार्य कृपलानी और चन्द्राशेखर भी संपूर्ण क्रांति का दर्शन समझ नहीं पाये या समझकर नहीं समझने का दिखावा करते रहे। संपूर्ण क्रांति, 1974 के आंदोलन में आये युवा, राजनीतिक पार्टियां और उनके यूथ-विंग करेंगे, ऐसा कोई भ्रम जेपी को नहीं था। इसीलिए उन्होंने संपूर्ण क्रांति के लिए छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी बनायी। बिहार आंदोलन का एक नारा था—'भ्रष्टाचार मिटाना है, नया बिहार बनाना है।' इस नारे को लगाने और जेल जाने वाले सत्ता की राजनीति में भ्रष्टाचार के नये-नये कीर्तिमान गढ़ने लगे। 'जात-पात तोड़ दो, तिलक दहेज छोड़ दो' नारा लगाने वाले सत्ता हथियाने के लिए जात-पात और धर्म की राजनीति करने लगे।

संपूर्ण क्रांति की गाड़ी 1980 आते-आते धुक-धुकाने लगी। क्योंकि रोटी के लिए रोजी और पारिवारिक जिम्मेवारी निभाने के लिए नौकरी, रोजगार की तलाश में संपूर्ण क्रांति के सैनिक निकल पड़े। मुट्ठी भर बच गये जो प्रयोग में जुटे रहे—बोधगया, पचमनिया, पोटका, बेतिया, अंबा जोगाई और मुम्बई के साथ-साथ भुसावल, वर्धा में लड़ाई चलती रही। इसके अतिरिक्त मेधा पाटकर, राजेन्द्र सिंह के आंदोलन से भी लोग जुड़े। वाहिनी के अधिकतर साथी संपूर्ण क्रांति का अलाव अपनी क्षमता भर जलाये रहे।

संपूर्ण क्रांति के उद्घोष के करीब 17 साल बाद दुनिया में 'ग्लोबलाइजेशन' का साइक्लोन बहा। जिसमें दुनिया मोबाइल में आ गई और भ्रष्टाचार पूरे समाज और राजनीति का अनिवार्य हिस्सा बन गया। भ्रष्टाचार, अन्याय, अनाचार के खिलाफ गुस्सा लोकलाइज होने लगा। सोवियत यूनियन को अमेरिका ने तोड़ दिया। वहां से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का आरंभ हुआ। तेल पर कब्जे के लिए तेल वाले मुल्कों पर कब्जे की शुरुआत हुई। चूंकि अरब देशों में तेल ही प्रमुख था तो उन देशों को अपने कब्जे में लेने की अमेरिकी और यूरोपीय देशों की साजिश से आतंकवाद भड़का। हथियार बनाने वालों की बल्ले-बल्ले हो गई। असुरक्षा बढ़ी। हिन्दू-मुसलमान की खाई, अमीर-गरीब की खाई से भी बड़ी होने लगी। दुनिया के मजदूरों एक हो, सिर्फ नारा बनकर कुछ नेताओं की कमाई का जरिया बन गया। सत्ता बंदूक की नली से निकालने की कोशिश हुई। उग्रवाद जड़ जमाने लगा। पूंजीपति, पूंजीवादी एक होने लगे। मजदूरों में क्लास बन गया। काम करने वाले मजदूरों से सफेदपोश मजदूर और किसान मजदूरों की दूरी बढ़ने लगी। किसानी असम्मान का पेशा बन गया। शिक्षा की दूकानें खुल गयीं। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा को त्याग कर बाबू बनाने वाली शिक्षा पर प्राइवेट स्कूल/कॉलेजों ने कब्जा कर लिया और सरकारी स्कूल/कॉलेज बेरोजगार पैदा करने की फैक्ट्री बन गये। मजदूरों में एक-दूसरे को पटक देने, आरक्षण को और आरक्षित जातियों को अपना दुश्मन मानने की मुहिम शुरू हुई। सरकार में नौकरियां कम की जाने लगीं। ठेके पर नौकरी और मजदूर बहाल किये जाने लगे। उसमें किसी तरह अपने लिए भी एक जगह बनाने की जुगत में संपूर्ण क्रांति के सिपाही भी लग गये। क्योंकि रोजी-रोटी के साथ-सामाजिक हैसियत उसके बगैर थी ही नहीं।

संपूर्ण क्रांति की गाड़ी अटक गई भ्रष्टाचार, लूट-खसोट और झूठ के दलदल में। ऐसे में संपूर्ण क्रांति की गाड़ी को तो फंसना ही था। ग्लोबलाइजेशन के बाद समाजवादी आंदोलनों, साम्यवादी आंदोलनों और ट्रेड यूनियन आंदोलनों को पूंजीपतियों ने बड़ी चालाकी से ध्वस्त कर दिया। इनके नेतृत्व को भांति-भांति की रिश्वत दी और बदनाम भी किया। लोगों का भरोसा ही उठ गया। बिहार जो क्रांति की धरती रही, वहां क्रांति के नाम का ही लोग मजाक उड़ाने लगे। इसके बावजूद 5 जून को प्रत्येक वर्ष संपूर्ण क्रांति को याद किया जाता रहा।

इस देश में तो लोग धड़ल्ले से कहने लगे हैं कि इससे बेहतर तो अंग्रेज थे, जहां इतना अनाचार, अत्याचार नहीं था, न्याय मिलता था। सरकार में शिकायत करने पर सुनवाई होती थी। चिट्ठियों के जवाब आते थे। अदालतों के आदेश लागू कराये जाते थे। इस देश को तो एक तानाशाह की जरूरत है। यहां तो मिलिट्री को सत्ता सौंप देना चाहिए। एक दिन में सबकुछ ठीक हो जायेगा। दुनिया के इस सबसे बड़े लोकतंत्र वाले देश में अब सांसद प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री नहीं चुनते, पार्टियों के कुछ नेता चुनते हैं, जिन्हें आलाकमान कहा जाता है। इसी देश में पार्टी के अध्यक्ष प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री के अधीनस्थ के रूप में काम करते हैं। राज्यपाल विद्वान और काबिल लोग नहीं बनाये जाते, वे बनाये जाते हैं जो आलाकमान के इशारे पर संविधान को उसके अनुरूप परिभाषित कर सरकार बनायें, बिगाड़ें। वहां भरोसा किस पर करें। संपूर्ण क्रांति के लिए आज सब कुछ मौजूद है, सिवाय भरोसे के। इस देश को आज ज्यादा जरूरत है संपूर्ण क्रांति की। 1974 की तुलना में देश के हालात और हालत दोनों बदतर हैं।

महात्मा गांधी ने, जेपी ने, भगत सिंह ने लोगों का भरोसा जीता था। सुभाषचंद्र बोस पर इतना भरोसा था कि लोग सैनिक बनकर जान देने निकल पड़े। संपूर्ण क्रांति के लिए लोगों के बीच नये सिरे से भरोसा और विश्वास बनाने और उसकी रक्षा करने की मुहिम चलाने की जरूरत है। अगर लोक का विश्वास हासिल हो गया तो संपूर्ण क्रांति के अगले चरण के लिए आज देश की सामाजिक जमीन बेहद उपजाऊ लगती है। ❑

संस्मरण

संघर्ष वाहिनी के दिन

❑ डॉ. विश्वनाथ आज़ाद

बात उन दिनों की है जब आपातकाल समाप्त हुए दो-ढाई साल हुए थे। जनता पार्टी की सरकार केंद्र के साथ साथ बिहार में भी थी. कर्पूरी ठाकुर बिहार के मुख्यमंत्री थे. उतर बिहार पूरी तरह बाढ़ की विभीषिका से दो चार हो रहा था. जे.पी. की अपील पर छात्र युवा संघर्ष वाहिनी की टीम अपने दम ख़म से राहत कार्य में लगी हुई थी. मुझे याद है, मैं उस समय धनबाद जिले का सह संयोजक था। जाबिर हुसैन स्वास्थ मंत्री थे, उनसे हुई चर्चा के अनुसार वाहिनी की स्थानीय टीम डा.एस.पी.सिन्हा और अन्य लोगों के सहयोग से बोकारो और धनबाद से लगभग दस बोरे चावल, आटा, कपड़े और पांच हजार रुपये नकद एकत्र किया गया. उसे स्वास्थ मंत्री के हाथों बाढ़ राहत के लिए भेजना था. किसी कारण से जाबिर जी का आना नहीं हुआ और हमने उसे साथियों और जे.पी. के निर्देशानुसार बाढ़ से अत्यधिक ग्रसित मुजफ्फरपुर जिले के तुर्की प्रखंड के गावों में वितरित करने का निश्चय किया. मुझे अब भी याद है कि आकाशवाणी वाहिनी के कार्यों की लगातार सराहना यह कह कर करता था कि जिस तरह बाढ़ बढ़ रही है, उसी तरह वाहिनी का राहत कार्य। पर कुछ लोगों को ये कार्य दीखते नहीं थे. उस समय जेपी डायलेसिस पर रहा करते थे और उन्हें जो सुनाया जाता, वे वही जान पाते थे।

उन दिनों जेपी से मिलने विभिन्न दलों के नेता आया करते थे तो सच्चिदानन्द जी (जेपी के सचिव) ने एक व्यवस्था बनाई थी कि शनिवार को केवल संघर्ष वाहिनी के साथी ही मिल सकेंगे. संयोग ऐसा रहा कि जिस दिन हमलोग सामग्री वितरित करके वापस आये, उस दिन शनिवार था और हमें मिलने का मौका मिल गया. 10 मिनट रुकने के बाद जेपी ने सच्चिदा बाबू को इशारा किया. उन्होंने हमें बताया कि जेपी बुला रहे हैं। उस समय मैंने खुद को भाग्यशाली माना जब जेपी को डायलेसिस रूम से अपने कंधे का सहारा देकर बरामदे तक ले आने का मौका मुझे मिला। उस दौरान जेपी ने मुझसे मेरा परिचय पूछा और आने का कारण जानना चाहा. हमने अपना परिचय दिया और बाढ़ राहत के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी उन्हें दी. उनके चेहरे पर एक अजीब-सा सुकून दिखा। उन्होंने सच्चिदा बाबू को बुला कर कहा कि 'ये साथी धनबाद से आकर और मुजफ्फरपुर जाकर राहत सामग्री वितरित करके आ रहे हैं और मुझे कुछ और बताया जाता है?' रुष्टता उनके चेहरे पर आ गई. उसी समय रेडियो पर समाचार आने लगा और वाहिनी के राहत कार्य की सराहना की गई. तब हमने देखा कि जेपी कुछ सहज हुए।

आपको शायद लगे कि इस संस्मरण में संस्मरण योग्य क्या है. तो मेरा कहना होगा कि इसमें संस्मरण योग्य है उस समय के लोगो की सोच. किस दरियादिली और सेवा भाव से सरकारें और लोग सहयोग किया करते थे। हमें धनबाद से पटना और फिर दीघा घाट से गंगा पार स्टीमर से जाना हुआ तो प्रशासन ने निःशुल्क व्यवस्था की। यह व्यवस्था आज भी जारी है, आज भी दानदाताओं की कमी नहीं है पर उस दान में मिली सामग्री का उचित वितरण समस्या है. उसमें भी अमानत में खयानत करने वाले कोई मौका नहीं छोड़ते।

मुझे यह भी याद है कि एक बार उड़ीसा भीषण तूफान और बाढ़ की विभीषिका झेल रहा था तो राहत कार्य में विभिन्न राज्यों से आई सामग्री लोगों तक पहुँचाने की सफल व्यवस्था नहीं हो सकी और प्रशासन राहत सामग्री की बन्दरबांट को रोकने में असफल रहा.

आज एक और समस्या संस्थाओं की भीड़ और सरकार की मानसिकता से खड़ी हो गयी है. पिछले दिनों बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उत्तर बिहार में बाढ़ राहत कार्य में लगी संस्थाओं से कहा कि सरकार को संस्थाओं की सहायता की जरुरत नहीं हैं. मैं सोचने पर मजबूर हूँ कि अगर सरकार को सस्थाओं की मदद की जरुरत नहीं है और वह खुद सक्षम है तो आज तक उत्तर बिहार बाढ़ की विभीषिका से उबर क्यों नहीं पाया? हर साल करोडों रूपये पानी की तरह बहाए जा रहे हैं पर बाढ़ का पानी लोगों को पानी पानी कर ही देता है. एक तरफ बाढ़ की विडम्बना तो दूसरी तरफ सुखाड़ की विडम्बना! उन क्षेत्रों में बगैर सरकार की अनुमति आप सिंचाई के लिए बोरिंग नहीं कर सकते. सरकार कोई समाधान नहीं निकाल कर और समस्या पैदा करने में लगी रहती है।

इस संस्मरण के पीछे एक और कारण यह है कि 1977 में जबसे थोड़ी राजनीतिक चेतना हुई है, तब से कई सरकारों को आते जाते देखा, पर समस्याएं ज्यों की त्यों खड़ी हैं. नेताओं की तकदीर बदल गई पर जनता की तस्वीर नहीं बदली. जिनके लिए 74 का 'सम्पूर्ण क्रान्ति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है' का नाद किया गया, वे परिस्थितियां ज्यों का त्यों है. जेपी लाख अस्वस्थ रहे, पर देश व समाज की समस्याओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता, उनकी बेचैनी सभी के दिलों पर राज करने के लिए काफी थी। अब तो हम उससे भी खतरनाक अघोषित आपातकाल से गुजर रहे हैं, पर जेपी जैसे नेतृत्व का अभाव है। ❑

मुसहरी आंदोलन
स्वर्ण जयंती वर्ष पर एक सिंहावलोकन

❑ तारकेश्वर मिश्र

आज ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित हिंसा में वृद्धि को देखते हुए देशभर में चिन्ता बढ़ी है। अंततः यह हिंसा राजनीतिक विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए है। यदि गरीबी, बेकारी और बहुत सारे सामाजिक, आर्थिक अन्याय लगातार कायम नहीं रहते तो हिंसा के लिए जमीन तैयार नहीं होती, यह जेपी का विश्वास था और उन्होंने मुसहरी में अनुभव किया कि अगर मौजूदा सुधार कानून समुचित रूप से कार्यान्वित कर दिये जाते तो ग्रामीण क्षेत्र में एक लघु क्रांति हो जाती। 'मेरा कथन अगर सत्य है तो इसका विपर्यय भी उतना ही सत्य है' इस आशय बोध का विवरण मुसहरी के अनुभव के आधार पर लिखी गयी किताब 'आमने-सामने' में विस्तार से उल्लिखित है।

मुजफ्फरपुर विकास मंडल की पृष्ठभूमि

मुजफ्फरपुर विकास मंडल एक स्वयं सेवी संस्था है। इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य एवं महत्त्व समय की एक विशेष परिस्थिति से जुड़कर ऐतिहासिक बन गया है। सन् 1970 तक मुसहरी प्रखंड में नक्सली प्रवृत्तियों एवं कृत्यों के जमाव के कारण व्यक्तिगत संरक्षण के नाम पर एक समुदाय, पुलिस को एकमात्र विकल्प मानने के लिए बाध्य हो चुका था और दूसरी ओर पुलिस आपरेशन के कारण निर्दोष लोग भी परेशान रहे थे। सैकड़ों अपराधी-निरपराधी नागरिक कानून एवं व्यवस्था के नाम पर जेल में ठूंस दिये गये थे। सभी राजनीतिक दल अपने-अपने दलीय दृष्टिकोण के अनुसार हाथ-पैर मार रहे थे। आम जनता में आतंक और निराशा का वातावरण छा रहा था। इसी परिप्रेक्ष्य में जेपी जून 1970 में तत्कालीन परिस्थितियों की गंभीरता की जानकारी के आधार पर मुसहरी आये। व्याप्त परिस्थितियों का उन्होंने वहां प्रत्यक्ष अनुभव किया। सभी समुदायों के प्रतिनिधियों, सरकारी अधिकारियों, स्थानीय संगठनों के प्रतिनिधियों एवं राजनैतिक दलों के नेताओं से चर्चा के उपरांत अनुभव के क्रम में उन्होंने तत्कालीन परिस्थिति को सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में वैषम्य और बेरोजगारी उत्पन्न करने वाली परिस्थिति की संज्ञा दी।

मुसहरी में जेपी का उभयपक्षी विरोध हुआ। भूपतियों ने कहा कि ये मजदूरों और गरीबों का मन बढ़ाने आये हैं और नक्सलियों ने कहा कि आप मुसहरी छोड़ दें ताकि क्रांति में कोई अवरोध पैदा न हो। जेपी ने भरसक प्रयास किया कि क्षेत्र में शांति स्थापित हो। अंततः उन्होंने शांति स्थापित करने के लिए 9 जून 1970 को सलहा मध्य विद्यालय में घोषणा की कि ''या तो काम पूरा होगा नहीं तो मेरी हड्डी गिरेगी''। जेपी को अंदाज था कि मुल्क में यत्र-तत्र की यह चिनगारी, अगर समय रहते बुझायी न जा सकी तो मुल्क भर में सर्वत्र फैल जायेगी। यही वजह थी, जिससे जेपी जैसे राष्ट्रीय नेता को मुसहरी की ओर सर्वाधिक ध्यान देने के लिए बाध्य होना पड़ा। उनकी दृष्टि में तत्कालीन समस्याओं का समाधान लोक-शिक्षण, ग्राम-भावना के संगठन एवं सामाजिक, आर्थिक न्याय पर आधारित संरचना में संभव था। समस्या का समाधान रोग के इलाज में नहीं, रोगी के इलाज में प्रतीत हुआ।

अतः उन्होंने क्षेत्र में लोक-शिक्षण, लोक-संगठन के माध्यम से शांतिपूर्ण परिवर्तन एवं न्यायपूर्ण संरचना के लिए ग्रामदान, ग्रामस्वराज की पद्धति पर कार्यों का स्वरूप निर्धारित किया। और तदनुसार क्षेत्र में कार्य प्रारंभ करने की प्रेरणा दी। विकास के कार्यक्रम सुव्यवस्थित ढंग से चलाने की दृष्टि से अनुभव किया गया कि एक सक्षम स्थानीय संस्था की स्थापना की जाय, जो सामाजिक, आर्थिक विकास की प्रक्रिया को सामान्य तौर पर अपने संपूर्ण कार्यक्षेत्र में गति प्रदान करती रहे। फलस्वरूप जेपी की प्रेरणा से उनकी ही अध्यक्षता में 10 मई 1972 को मुजफ्फरपुर विकास मंडल संस्था का गठन हुआ, जिसमें बिहार रिलीफ कमेटी, जिला सर्वोदय मंडल, अवार्ड, प्रखंड स्वराज्य सभा, मुसहरी के स्थानीय शिक्षकों, नौजवानों एवं सामाजिक-आर्थिक पहलुओं के विशेषज्ञों का प्रतिनिधित्व लिया गया। इस प्रकार ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य अभियान की सामाजिक एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया को स्वाश्रयी एवं स्वचालित बनाने के लिए स्थानीय नेतृत्व को तकनीकी एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की पृष्ठभूमि में अवार्ड, बिहार रिलीफ कमेटी, जिला सर्वोदय मंडल एवं राजकीय विभागों से अर्थपूर्ण समन्वय एवं सहयोग का सिलसिला शुरू हुआ।

ज्ञातव्य है कि जेपी मुजफ्फरपुर विकास मंडल के आजीवन अध्यक्ष रहे। उनके मार्गदर्शन में मंडल ने सामाजिक, आर्थिक दिशा में अनेक प्रेरक कार्य किये। 5 जून 2020 को मुसहरी स्वर्ण जयंती वर्ष समारोहपूर्वक मनाये जाने की योजना है। जय ग्राम से जय जगत के परिवेश को सुदृढ़ करने वाले प्रबुद्ध नागरिक, संगठन, संस्थान इस कार्यक्रम में मार्गदर्शन एवं सहयोग देने की कृपा करें, यह एक प्रारंभिक निवेदन है। समेकित निवेदन विमर्शोपरांत गठित कमेटी द्वारा जारी किया जायेगा। ❑

क्या आरएसएस ने महात्मा गांधी को दिल से स्वीकार किया है?

❑ श्रीकांत बंगाले

हाल ही में प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने कहा कि नाथूराम गोडसे देशभक्त थे, देशभक्त हैं, और देशभक्त रहेंगे. उन्हें आतंकवादी कहने वालों को अपने गिरेबां में झांकने की ज़रूरत है और चुनावों में इन लोगों को हम करारा जवाब देंगे. वे भोपाल लोकसभा क्षेत्र से भाजपा की उम्मीदवार हैं.

इस बयान के बाद बीजेपी ने कहा है कि वह इस बयान से सहमत नहीं है और यह कि साध्वी को माफ़ी मांगनी होगी. उसके बाद साध्वी ने माफ़ी भी मांगी. बीजेपी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक गांधी का रोज़ नाम लेते हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तो गांधी की विचारधारा को ध्यान में रखकर स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत भी की. लेकिन सवाल यह है कि क्या आरएसएस ने सचमुच गांधी को स्वीकार कर लिया है? या केवल अपनी सुविधा से स्वीकार किया है?

वरिष्ठ पत्रकार निखिल वागले कहते हैं कि आरएसएस ने गांधी को अपनी सुविधा के अनुसार स्वीकार किया है. वे कहते हैं कि आरएसएस को जिस दिन गांधी प्रातःस्मरणीय लगने लगेंगे, उस दिन संघ संघ नहीं रह जाएगा. अगर संघ गांधी की विचारधारा को स्वीकार करेगा तो वह हिंदू राष्ट्र पर ज़ोर नहीं दे पायेगा. इसका एक मतलब ये भी है कि संघ केवल दिखाने के लिए गांधी का नाम लेता है.

गांधी की हत्या के बाद आरएसएस पर हत्या का शक था इसलिए उस पर प्रतिबंध भी लगाया गया था. सरदार वल्लभभाई पटेल ने गुरु गोलवरकर को लिखे पत्र में साफ़ तौर पर लिखा है कि गांधी की हत्या के लिए देश में जो ज़हरीला वातावरण बनाया गया है, उसके लिए आरएसएस जिम्मेदार है. उन्होंने आगे लिखा है कि संघ ने गांधी को केवल सुविधा के तौर पर स्वीकार किया है. क्योंकि उसे महसूस हो गया है कि गांधी की हत्या के बाद भी वे मरे नहीं हैं।

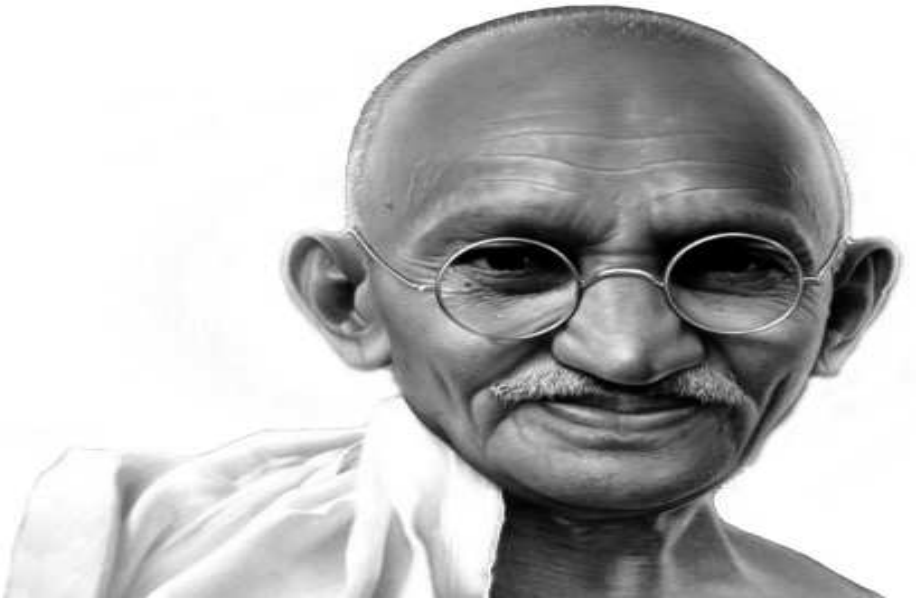

लेकिन भाजपा ने प्रज्ञा सिंह ठाकुर जैसे आतंकवाद के आरोपी को टिकट देकर ये साबित कर दिया है कि वह गांधी पर भरोसा नहीं करती. प्रज्ञा सिंह गोडसे को देशभक्त कहती हैं. ये कोई अचानक दी गयी प्रतिक्रिया नहीं है. यह आरएसएस की व्यापक साजिश का एक हिस्सा है. गोडसे को लेकर आरएसएस समय-समय पर राष्ट्रीय भावना टटोलता रहा है. गोडसे आतंकवादी नहीं हत्यारा है, यह चर्चा भी उसी साजिश का एक हिस्सा है. हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए संघ जो माहौल बना रहा है, ये भी उसी साजिश का हिस्सा है. इसलिए संघ के लिए गोडसे प्यारा है, न कि गांधी.

आलोचना करने वाले सबूत दें

आरएसएस के पश्चिम क्षेत्र के प्रचार प्रमुख प्रमोद बापट कहते हैं कि आरएसएस की गांधी भक्ति झूठी है, ये कहने वालों को इसका सबूत देना चाहिए. वे कहते हैं कि आरएसएस की गांधी भक्ति झूठी है, आरएसएस को नाथूराम गोडसे प्यारा है, ऐसा कुछ लोग कहते रहे हैं. लेकिन ऐसा कहने वाले सबूत नहीं देते. वे यह बात किस आधार पर कह रहे हैं, यह नहीं बताते.

बापट कहते हैं कि आरएसएस को गांधी कितने प्यारे हैं, ये किसी को बताने की ज़रूरत नहीं है. आरएसएस के मन में गांधी के बारे में जो भावना है, वह किसी को दिखाने की ज़रूरत नहीं है. हमें जो लगता है, हम उसी आधार पर समाज में काम करते हैं. और समाज इसे स्वीकार करता है, हमारे लिए यह पर्याप्त है. हम समाज के लिए प्रतिबद्ध हैं.

यह पूछने पर कि क्या ऐसे बयान हिंदू राष्ट्र के निर्माण के मकसद से दिए जा रहे हैं, बापट ने कहा कि नाथूराम गोडसे के बारे में ये बयानबाजी राजनीतिक दलों के कुछ लोग कर रहे हैं, संघ नहीं कर रहा है. इसका जवाब उन्हीं लोगों से लेना चाहिए.

गांधी की हत्या और आरएसएस

महात्मा गांधी की हत्या के तार आरएसएस से भी जोड़े जाते रहे हैं. नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद से प्रकाशित गांधी के निजी सचिव प्यारेलाल की किताब 'महात्मा गांधी : लास्ट फ़ेज' (पृष्ठ संख्या-70) में लिखा है कि आरएसएस के सदस्यों को कुछ स्थानों पर पहले से निर्देश था कि वे शुक्रवार को अच्छी ख़बर के लिए रेडियो खोलकर रखें. इसके साथ ही कई जगहों पर

आरएसएस के सदस्यों ने मिठाई भी बांटी थी.

गांधी की हत्या के दो दशक बाद आरएसएस के मुखपत्र ऑर्गेनाइज़र ने 11 जनवरी 1970 के संपादकीय में लिखा था कि नेहरू के पाकिस्तान समर्थक होने और गांधी जी के अनशन पर जाने से लोगों में भारी नाराज़गी थी. ऐसे में नाथूराम गोडसे लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा था, गांधी की हत्या जनता के आक्रोश की अभिव्यक्ति थी.

गांधी की हत्या से जुड़े कुछ और तथ्य सामने आने के बाद सरकार ने 22 मार्च 1965 को एक जाँच आयोग का गठन किया. 21 नवंबर 1966 को इस जाँच आयोग की जिम्मेदारी सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जस्टिस जेएल कपूर को दी गई. कपूर आयोग की रिपोर्ट में समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया और कमलादेवी चट्टोपाध्याय की प्रेस कॉन्फ्रेंस में उस बयान का जिक्र है, जिसमें इन्होंने कहा था कि गांधी की हत्या के लिए कोई एक व्यक्ति जिम्मेदार नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक बड़ी साजिश और संगठन है. इस संगठन में इन्होंने आरएसएस, हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग का नाम लिया था.

गांधी की अंत्येष्टि के ठीक बाद 31 जनवरी को कैबिनेट की बैठक बुलाई गई. इस बैठक में कैबिनेट के सीनियर मंत्री, बड़े अधिकारी और पुलिस के लोग शामिल थे. इसमें आरएसएस और हिन्दू महासभा को प्रतिबंधित करने का फ़ैसला लिया गया.

नाथूराम गोडसे के भाई गोपाल गोडसे ने 28 जनवरी, 1994 को फ्रंटलाइन को दिए इंटरव्यू में कहा था कि हम सभी भाई आरएसएस में थे. नाथूराम, दत्तात्रेय, मैं ख़ुद और गोविंद. आप कह सकते हैं कि हम अपने घर में नहीं, आरएसएस में पले-बढ़े हैं. आरएसएस हमारे लिए परिवार था. नाथूराम आरएसएस में बौद्धिक कार्यवाह बन गया था. नाथूराम ने अपने बयान में आरएसएस छोड़ने की बात कही थी. उसने यह बयान इसलिए दिया था क्योंकि गोलवलकर और आरएसएस गांधी की हत्या के बाद मुश्किल में फँस जाते, लेकिन नाथूराम ने आरएसएस नहीं छोड़ा था.

इसी इंटरव्यू में गोपाल गोडसे से पूछा गया कि आडवाणी ने नाथूराम के आरएसएस से संबंध को ख़ारिज किया है तो इसके जवाब में उसने कहा कि वे कायरतापूर्ण बात कर रहे हैं. आप यह कह सकते हैं कि आरएसएस ने कोई प्रस्ताव पास नहीं किया था कि जाओ और गांधी की हत्या कर दो, लेकिन आप नाथूराम के आरएसएस से संबंधों को ख़ारिज नहीं कर सकते. हिन्दू महासभा ने ऐसा नहीं कहा. नाथूराम ने बौद्धिक कार्यवाह रहते हुए 1944 में हिन्दू महासभा के लिए काम करना शुरू किया था.

हिन्दू महासभा के वर्तमान महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि आरएसएस अब गांधीवादी बन गया है. उन्हें अब गोडसे से दिक्कत होती है, जबकि सच यह है कि गोडसे हमारे थे और हम ये बात मानते हैं कि वे आरएसएस के भी थे, लेकिन आरएसएस इसे मानने से कन्नी काटता है। शर्मा कहते हैं कि तब आरएसएस और हिन्दू महासभा कोई अलग संगठन नहीं थे.

गांधी की हत्या के बाद पटेल को एक युवक ने पत्र लिखा, जिसमें उसने खुद को आरएसएस का सदस्य बताया था। उसने लिखा कि आरएसएस से उसका मोहभंग हो गया है. पत्र में उसने लिखा कि आरएसएस ने पहले से ही कुछ जगहों पर अपने लोगों को कह दिया था कि अच्छी ख़बर आने वाली है, शुक्रवार को रेडियो खुला रखें. हत्या के बाद आरएसएस की शाखाओं में मिठाइयाँ बाँटी गईं. (*तुषार गांधी, लेट्स किल गांधी, पृष्ठ 138)*

सितंबर 1948 में आरएसएस के तब के प्रमुख माधव सदाशिव गोलवलकर ने पटेल को पत्र लिखकर आरएसएस पर पाबंदी लगाने का विरोध किया था. सरदार पटेल ने गोलवलकर को 11 सितंबर 1948 को भेजे जवाब में कहा था कि आरएसएस ने हिन्दू समाज की सेवा की है, लेकिन आपत्ति इस बात पर है कि आरएसएस बदले की भावना से मुसलमानों पर हमले करता है. आपके हर भाषण में सांप्रदायिक ज़हर भरा रहता है. इसका नतीजा यह हुआ कि देश को गांधी का बलिदान देना पड़ा. गांधी की हत्या के बाद आरएसएस के लोगों ने खुशियां मनाईं और मिठाई बाँटीं. ऐसे में सरकार के लिए आरएसएस को बैन करना ज़रूरी हो गया है।

16 अगस्त 1949 को पटेल से गोलवलकर ने मुलाक़ात की. इस मुलाक़ात के बाद पटेल ने नेहरू को लिखा कि मैंने गोलवलकर को बताया है कि उन्होंने क्या ग़लती की है, जो नहीं करनी चाहिए थी. मैंने उनसे साफ़ कहा है कि वे विनाशकारी तरीक़ों से बाज़ आएँ और रचनात्मक भूमिका अदा करें. **–बीबीसी**

चेतावनी

भोपाल के वायुमंडल में जहरीले कण अब भी मौजूद

संयुक्त राष्ट्र की एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया कि हजारों लोगों की मौत का कारण बनी 1984 की भोपाल गैस त्रासदी 20वीं सदी की दुनिया की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटनाओं में से एक है। यूएन की रिपोर्ट में आगाह किया गया है कि हर साल करीब 27 लाख 80 हजार श्रमिकों की पेशे से जुड़ी दुर्घटनाओं और काम के चलते हुई बीमारियों से मौत हो जाती है। भोपाल में यूनियन कार्बाइड के कीटनाशक संयंत्र से निकली कम से कम 30 टन मिथाइल आइसोसाइनाइट गैस से 6 लाख से ज्यादा मजदूर और आसपास रहने वाले लोग प्रभावित हुए थे। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, हादसे में 15 हजार लोगों की मौत हुई थी। वायुमंडल में जहरीले कण अब भी मौजूद हैं और हजारों पीड़ित व उनकी अगली पीढ़ियां सांस संबंधित बीमारियों से जूझ रही हैं। इतना ही नहीं, उनके अंदरूनी अंगों और रोग प्रतिरोधक क्षमता को नुकसान पहुंचा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 1919 के बाद भोपाल त्रासदी सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटनाओं में से एक थी।

आंखों देखी : विनोबानगर से लौटकर

बिहार में कैमूर जिला मुख्यालय से 20-25 किलोमीटर अंदर की तरफ आइये तो विन्ध्य पर्वत श्रृंखला की कैमूर पहाड़ियों की मनोहारी छवि मन मोह लेती है। इसी पर्वतमाला की तलहटी में बसा है अधौरा प्रखंड का बड़वान गांव। बड़वान ग्राम पंचायत भी है। बीती दस मई को हम इसी बड़वान ग्राम पंचायत क्षेत्र में बसायी गयी दलित बस्ती विनोबानगर की यात्रा पर थे। इस यात्रा के प्रेरक बने खुद को विद्यार्थी कहने वाले अवकाश प्राप्त आईएएस अधिकारी डॉ. कमल टावरी, हमारे मार्गदर्शक थे बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष कालिका भाई और सहयात्री थे सर्व सेवा संघ प्रकाशन के पूर्व संयोजक रामधीरज भाई और वाराणसी के युवा समाजसेवी दीपक त्रिपाठी।

कैमूर जिला मुख्यालय, जिसे भभुआ के नाम से भी जाना जाता है, हरे रंग में रंगे मकानों, भवनों और प्रकृति की हरीतिमा से युक्त हरियाला बानक बनाता है। शायद इसीलिए भभुआ अब ग्रीन सिटी के नाम से जाना जाने लगा है। अधौरा प्रखंड क्षेत्र में प्रवेश करते ही दूर से ही नजर आते हैं कैमूर पहाड़ियों के स्याह टीले, जो इस सुविस्तृत पर्वतीय सिवान के उपजाऊ खेतों में सावधान खड़े प्रहरियों से दीखते हैं। ताप के ताये हुए इन दिनों में जब ये पहाड़ियां वनाच्छादित नहीं होतीं तो इनका चिटकता हुआ प्राकृतिक सौन्दर्य अपने आप में अनूठी अनुभूति पैदा करता है। सिवान से गेहूं की फसल कट चुकी है और दूर दूर तक फैले हुए खेतों में पड़ रह गयी गेहूं की पीली डांठ अद्भुत स्वर्णिम सौन्दर्य पैदा करती है।

गहराती हुई शाम की धुंध में वृक्षों और लतरों से विहीन इन पहाड़ों का रंग अनायास अपनी ओर खींचता है। कालिका भाई बता रहे थे कि सावन भादों के महीनों में जब बरसात की झड़ी लगती है तब इन पत्थरों की कोख से अंकुर निकलना शुरू होते हैं। और धीरे-धीरे इन पहाड़ों की रंगत हरियाली आभा से दीप्तिमान हो उठती है। मानसून के दिनों में कैमूर का शहरी इलाका ही नहीं, सुदूर क्षितिज तक विस्तारित यह वन प्रान्तर भी ग्रीन सिटी के नाम को सार्थक करने लगता है।

इन्हीं पहाड़ों के ठीक नीचे, इनकी तलहटी में 1956 में बसाया गया था विनोबा नगर। भूदान आंदोलन में इस तलहटी में मिली थी लगभग 86 एकड़ जमीन। पूरी तरह ऊबड़-खाबड़, असमतल लेकिन वनवृक्षों से अच्छादित इस 86 एकड़ जमीन के सम्यक वितरण के लिए सर्वोदय सहयोग समिति बनायी गयी थी और यह पूरी जमीन समिति के हवाले कर दी गयी थी। विनोबा के सीधे हस्तक्षेप से सर्वोदय सहयोग समिति ने इस जमीन पर भूमिहीन और निर्धन कुल 39 दलित परिवारों को बसाने की योजना बनायी। इन परिवारों ने इस जमीन पर हाड़तोड़ मेहनत शुरू की और असमतल पर्वतीय भूमि के समतलीकरण के काम में लगे। श्रमसाध्य काम था। कुछ परिवार इस कठिन श्रम के साथ खुद को साध नहीं पाये और जमीन से उखड़ने लगे, कुछ पलायन कर गये। एक वह दिन था जब 1956 में ये 39 परिवार वहां लाये गये थे और एक आज का दिन है जब उनमें से केवल 14 परिवार वहां बचे हैं। इस बीच लगभग तीन-चार पीढ़ियां बीत गयी। इन 14 परिवारों से कई परिवार निकले और आज लगभग 250 की आबादी विनोबा नगर की आबाद करती है। लगभग 5-6 एकड़ जमीन में आज विनोबानगर की बस्ती है और शेष लगभग 80 एकड़ जमीन खेती के लिए है। इनमें कुछ असमतल और वन भूमि है, तो कुछ अयोग्य भूमि भी है। इस जमीन पर अब यही 14 परिवार मिल-जुलकर खेती करते हैं।

बिहार सर्वोदय मंडल की तरफ से बस्ती की देखरेख और सुविधाएं जुटाने के काम में कालिका भाई और उनकी टीम प्राणपण से जुटी रहती है। ग्राम पंचायत की तरफ से एक सामुदायिक भवन बनवाया गया है। बस्ती के बाहर ही एक सरकारी प्राइमरी स्कूल भी है। कालिका भाई के प्रयासों से एक हैण्डपाइप भी लगवाया गया है। लेकिन आज भी वहां की मुख्य समस्या पानी ही बना हुआ है। बस्ती और पहाड़ियों के बीच एक पुराना और बहुत गहरा कुंआ भी है लेकिन उसका जल स्रोत सूख गया है। खेतों की सिंचाई का भी कोई साधन नहीं है। हम सर्वोदय सहयोग समिति के अध्यक्ष विनोद पासवान और मंत्री गुपुत राम से भी मिले। बस्ती वालों के साथ हमारी बातचीत के बीच मंत्री गुपुत राम ने बताया कि बिहार सर्वोदय मंडल के सहयोग से मुख्य मार्ग से बस्ती में आने वाला संपर्क मार्ग तो बन गया है लेकिन सिंचाई के लिए सहायक नहर या सरकारी ट्यूबेल की बहुत जरूरत है। सामुदायिक या सरकारी स्तर से नहर, ट्यूबवेल आदि की व्यवस्था हो पाती तो खेती रफ्तार पकड़ पाती। पेयजल के लिए भी पूरी बस्ती एकमात्र हैण्डपम्प पर आश्रित है। यह सबसे बड़ी समस्या है।

कालिका भाई ने बताया कि सीमित साधनों और अथक परिश्रम से जितना संभव हो सका है, अब तक हमलोग करते रहे हैं। एकमात्र प्राइमरी स्कूल भी अब पूरी बस्ती के लिए पर्याप्त नहीं रह गया। बड़े होते बच्चों के लिए एक मिडिल स्कूल खोले जाने की नितांत जरूरत है। खेती में भी जैविक खेती के प्रयोग किये जाने की जरूरत है, जिसके लिए सरकारी मशीनरी का ध्यान इस बस्ती की तरफ खींचा जा रहा है। बस्ती के युवकों और महिलाओं के लिए रोजगार की दृष्टि से लघु और कुटीर उद्योग शुरू करने की भी बहुत आवश्यकता है। बस्ती छोटी ही है, लेकिन आबादी अब सघन हो रही है। स्वस्थ और स्वच्छता पर ध्यान देने की जरूरत है।

बस्ती, सिवान और पहाड़ की तलहटियों से लेकर पूरे विनोबा नगर में हम सबने भ्रमण किया और विनोबा नगर में बसे लोगों की समस्याओं से मुखातिब हुए। हमने लक्ष्य किया कि शहरी विकास की दहाड़ से दूर प्रकृति की स्वच्छ गोद में बसा आचार्य विनोबा का यह प्रयोग क्षेत्र प्राकृतिक सम्पदा से मालामाल है। स्वच्छ हवा, प्राकृतिक वातावरण, शुद्ध पानी और अत्यन्त उपजाऊ इस मिट्टी में बेहतर जीवन की अपार संभावनाएं हैं। इस जमीन में पोषक खनिजों की कितनी भरमार है, इसका प्रमाण खेतों में उगे वनवृक्षों की पत्तियों और टहनियों की चमक देखकर मिलता है। समाज और सरकार अगर समुचित ध्यान दे सके तो विनोबा नगर की आबादी का जीवन बेहतर बनाया जा सकता है और जैविक खेती के लिए उपयुक्त सिंचाई आदि के पर्याप्त साधन हों तो यह धरती सोना उगल सकती है।

–प्रेम प्रकाश

गतिविधियां एवं समाचार

किशन पटनायक को केसला में याद किया गया

आज जब युवा अपना कैरियर बनाने के लिए पागल हैं, तब 80 के दशक में अपना सब कुछ छोड़कर मध्य प्रदेश के इटारसी से 20 किलोमीटर दूर आदिवासी प्रखंड केसला में आ बसे दो युवकों की कहानी आज भी वहां के आदिवासियों के लिए प्रेरणा बनी हुई है। इस अंचल के आदिवासियों की आवाज बने किसान आदिवासी संगठन की नींव रखने वाले सुनील भाई एवं राजनारायण भाई और उनके राजनीतिक गुरू किशन पटनायक को 27 अप्रैल को उनके साथियों ने याद किया। सुनील-राजनारायण ने इसी क्षेत्र में आदिवासियों को संगठित कर उनके हक-अधिकारों की मशाल जलाई थी।

उल्लेखनीय है कि सुनील भाई और राजनारायण विचारों से समाजवाद व किशन पटनायक से प्रभावित थे। वे पहले समता संगठन व बाद में समाजवादी जनपरिषद से जुड़े रहे। इन दोनों ने आदिवासियों के साथ मिल कर हर तरह की गैरबराबरी और अन्याय व अत्याचार के खिलाफ बराबरी व सम्मान से जीने के लिए लड़ाई लड़ी।

नागरिक संगठनों, पर्यावरण-वादियों ने दिया शासन को कानूनी नोटिस

नर्मदा नदी की मौत सबसे अधिक गुजरात की जनता अपने आंखों के समक्ष देख रही है। उन्हें अब पता चला है कि नर्मदा पर बना सरदार सरोवर बांध गुजरात की जीवनरेखा साबित होने के बदले मरणरेखा साबित हो रहा है। गुजरात के अनेक संगठनों की ओर से सामूहिक तौर पर कानूनी नोटिस जारी की गयी है। ये नोटिस नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण और उसके सभी उपदल, नर्मदा मेन कैनाल कमेटी, केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय और सरदार सरोवर जलाशय नियंत्रण कमेटी को भेजे गये है।

पर्यावरणीय, विषेशज्ञों ने कहा है कि सरदार सरोवर परियोजना संपूर्ण अध्ययन और वैज्ञानिक आकलन के बिना आगे धकेली गयी, साथ ही 'सरदार पटेल की स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' के नर्मदा, की पर्यावरणीय व्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन नहीं किया गया। जिस नदी पर विकास का दावा किया गया, उस नदी का ही विनाश जनता की श्रद्धा, आजीविका तथा प्राकृतिक संसाधनों को गंभीर ठेस पहुंचाकर अपरिचित तथा अपरिवर्तनीय नुकसान का कारण बनेगा।

नर्मदा बचाओ आंदोलन ने गुजरात के इन संगठनों की पहल का स्वागत किया है। नर्मदा बचाओ आंदोलन की 30 साल पहले दी हुई चेतावनी सही साबित हो रही है। तब सरकार ने आंदोलनकारियों पर विकास विरोधी होने के आरोप लगाये थे और अब स्वयं ही विकास विरोधी और विज्ञान विरोधी साबित हो रही है। उक्त जानकारी नर्मदा बचाओ आंदोलन की ओर से देवीसिंह तोमर, पेमा भिलाला, जगदीश पटेल, श्यामा मछुआरा और मेधा पाटकर ने दी है।

गोडसे का जन्मदिन मनाने के आरोप में हिंदू महासभा के छह लोग गिरफ्तार

19 मई को हिंदू महासभा के छह कार्यकर्ताओं ने सूरत के लिम्बायत इलाके में एक मंदिर में महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का जन्मदिन कथित तौर पर मनाया। सूरत पुलिस आयुक्त सतीश शर्मा ने बताया कि हिंदू महासभा कार्यकर्ताओं ने शहर के लिम्बायत इलाके में सूर्यमुखी हनुमान मंदिर के परिसर में जश्न मनाया जिसके बाद उन्हें सोमवार को गिरफ्तार कर लिया गया। शर्मा ने कहा कि गांधी जी की हत्या करने वाले गोडसे के जन्मदिन का जश्न मनाने की उनकी हरकत से नागरिकों की भावनाएं काफी आहत हुई है। यह लोगों को भड़काने और शांतिपूर्ण माहौल को बिगाड़ने की कोशिश है।

अधिकारियों ने बताया कि इन छह लोगों को आईपीसी की धारा 153, 153ए और 153बी के तहत गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने गिरफ्तार लोगों की पहचान हिरेन मशरू, वला भारवाड, वीराल माल्वी, हितेश सुनार, योगेश पटेल और मनीष कलाल के रूप में की है।

मानव इतिहास में पहली बार वायुमंडल में कार्बन डाय-ऑक्साइड का स्तर 415 पीपीएम से पार

अमेरिका स्थित एक लैबोरेटरी के सेंसर्स के अनुसार, वायुमंडल में कार्बन डायऑक्साइड का स्तर 415.26 पीपीएम (पार्ट्स पर मिलियन) पहुंच गया और मानव इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है। 2016 में कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर 400 पीपीएम जबकि 2017 में 410 पीपीएम था। गौरतलब है, तकरीबन 100 साल पहले वायुमंडल में कार्बन डायऑक्साइड की मात्रा 300 पीपीएम थी।

समग्र क्रांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

–श्याम बहादुर 'नम्र'

समग्र-क्रांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

चलो कि ऊंच-नीच, जाति-भेद का विनाश हो,
सभी को मिल सके खुशी, न कोई मन उदास हो।
समत्व-शांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो,
समग्र-क्रांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

विकास हो, मगर किसी का हक कभी छिने नहीं,
बंटे प्रकाश हर जगह, न अंधकार हो कहीं।
चलो कि लूट के खिलाफ, युद्ध तुम लड़े चलो,
समग्र-क्रांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

थके, गिरे जो आज हैं, वो क्रांति-वीर बन सकें,
दमन की ताकतों के सामने, निडर जो तन सकें,
उन्हीं के वास्ते, नया समाज तुम गढ़े चलो।
समग्र-क्रांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

हरे-भरे वनों का जिस तरह विनाश हो रहा,
अकाल-बाढ़ से उजाड़, हो रही वसुंधरा।
गगन में चिमनियां मिलों की हैं, धुआं उगल रहीं,
नदी को गंदी नालियां, जहर में हैं बदल रहीं।

गलत विकास की दिशा के सामने अड़े चलो।
समग्र-क्रांति के लिए, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

पर्यावरण दिवस पर

राष्ट्र नहीं होती भुक्खड़ जनता

❑ श्याम बहादुर 'नम्र'

नष्ट हो जायें जंगल,
आम में न आयें बौर,
बाग में न चहकें चिड़ियां,
कोयल को न मिले कूकने का ठौर।

मर जायें कामधेनु या नन्दी
विषैला पानी पीकर
खत्म हो जायें मछलियां,
क्या करेंगी जीकर!

कुछ किसान या मछुआरे ही तो
होंगे बेरोजगार
जहरीले धुएं से,
कुछ लाख लोग ही तो होंगे बीमार,
या छोड़ देंगे दुनिया कुछ हजार,
क्या फर्क पड़ता है!
राष्ट-हित सर्वोपरि है,
उसके लिए इतना तो चलता है।

इसलिए पर्यावरण की बात
मत उठाओ,
विकास की दौड़ से राष्ट्र को पीछे
मत लौटाओ।

आदमी तो उन्होंने बहुत पहले खत्म
कर दिया होता,
अगर उन्हें बाजार का ख्याल
न रहा होता।

क्योंकि मशीनें सिर्फ ऊर्जा खाती हैं,
वो बाजार में माल खरीदने कहां
जाती हैं?
उनके माल के लिए बाजार जरूरी है,
और आदमी का जिन्दा रहना
उनकी मजबूरी है।

इसलिए वे आदमी को मरने नहीं देंगे,
उसे मशीन बनायेंगे,
कम्प्यूटर के ताल पर
उसको नचायेंगे।
मुहल्ले-मुहल्ले गांव-गांव
टीवी पहुंचायेंगे।
जैसा वे चाहते हैं,
वैसी बात रोज-रोज ठोंक-ठोंक
सबके दिमाग में घुसायेंगे।

वो ऐसा दिखायेंगे विज्ञान का कमाल,
कि लोग भूल जायेंगे भूख का सवाल

उनके लिए जरूरी है आदमी एक-सी
हरकत करे
पर एक न रहे,
वे जिधर चाहें, वह उधर बहे।

राष्ट्रीय एकता के नाम पर आपस में
दंगा करे,
देश की इज्जत के लिए एक-दूसरे को
नंगा करे।
वे जनता को सम्प्रदाय या
जाति में बांटें,
और लोग उनकी साम्प्रदायिक
सद्भावना के तलुए चाटें।

लेकिन हम उनका सपना पूरा नहीं
होने देंगे,
जनता के भीतर के आदमी को नहीं
सोने देंगे।

फिर मछुआरे हों या किसान,
मजदूर हों या दस्तकार,
हम सब करेंगे उस नयी सुबह का
इंतजार,
इंतजार क्यों? हम उसे जल्द लायेंगे,
जिसमें एकजुट होकर ममता का गीत
गायेंगे।

और तब, वो अपने ही दुश्चक्र में
फंस के मरेंगे,
विषमता के दल-दल में धंस के मरेंगे।
क्योंकि मशीनें
उनके मुनाफे के लिए नहीं,
सबकी खुशहाली के लिए
काम करेंगी,
थकने पर वे भी आराम करेंगी।

फिर आदमी भी काम से नहीं थकेगा,
मशीनों के साथ आराम से चलेगा।

और फिर से हरियाली के गीतों से
गूंजेगा जंगल,
खेत-खेत लहरायेगी अन्नपूर्णा फसल,
नहीं मरेंगी मछलियां, लहरों से खेलेंगी
फिर कूकेगी कोयल,
फिर चिड़िया चहकेंगी।

लोग दुनिया नहीं छोड़ेंगे
गैस के असर से,
कामधेनु होगी घर-घर,
नन्दी भी मरेगा नहीं
पानी के जहर से।

भर जायेंगे कुदरत के सारे घाव,
नदियों में मवाद नहीं, अमृत बहेगा,
टूट कर बिखर जायेंगे धुएं के पहाड़
खुली सांस हम भी लेंगे,
सूरज भी लेगा,
हवा का हर झोंका
ताजगी को स्वर देगा।

न रहेगा प्रदूषण, न शोषण, न दमन,
चारों ओर होगा बस चैन और अमन।
और टूट जायेंगी भौगोलिक सीमाएं,
खुल जायेंगी सभी दिशायें,
तब राष्ट्र, घुटन की कैद नहीं,
पूरा संसार होगा,
विश्व-बंधुत्व का सपना साकार होगा।

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।